चकमक

अगस्त १९९९ बाल विज्ञान पत्रिका रु 10.00





● सुखविन्दर स्वाति, पाँचवीं, देहरादून, उ. प्र.



● रीना चौहान, बिजुर, धार, म. प्र.

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-15 अंक-2 अगस्त, 1999

सम्पादन
विनोद रायना
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
टुलटुल विस्वास

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह, मनोज निगम,
अशोक रोकड़े

सहयोग
राकेश खत्री
सुशील शुक्ला

चकमक का चंदा

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक ख़र्च हमारा
चंदा, मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

कवर का कागज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य
ई-1/25
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म. प्र.)
फोन : 563380



● प्रीति राजपूत, आठ वर्ष, लखनऊ, उ. प्र.

167 वें अंक में .....

विशेष

कविताएँ

नाटक

धारावाहिक शृंखला

हर बार की तरह

और यह भी

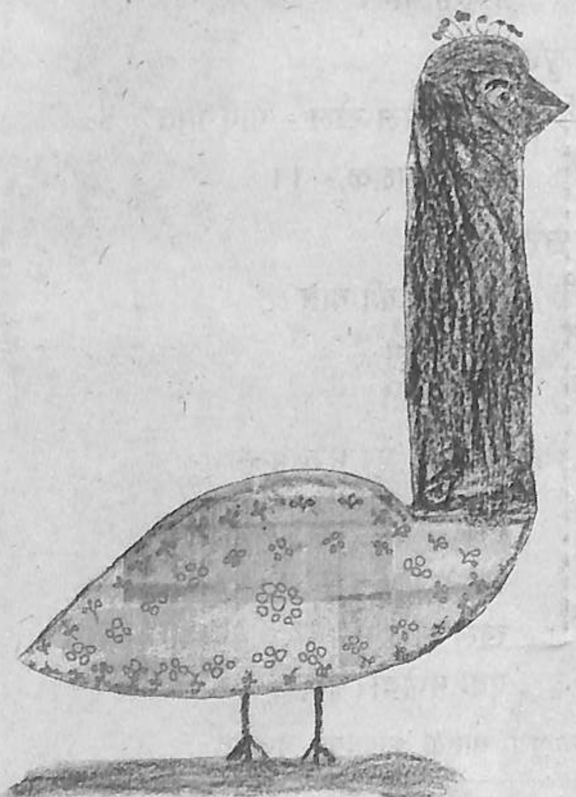
आवरण : गाड़िया पुर्ड़, सातवीं, भावनगर, गुजरात

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

चंडीगढ़ में बम नहीं गिरेगा
जंग तो कारगिल में चल रही है न!
अगर चंडीगढ़ में गिरे भी तो
सैनिक अड्डों पर ही गिरेगा
वो तो चंडीमंदिर और सेक्टर 47 में हैं
मैं ज़िंदा रहूँगी!
वैसे चंडीगढ़ पाकिस्तान में होता तो क्या हो जाता
लोगों का सुखी रहना ज़रूरी है!
मैं मरना नहीं चाहती!
दुनिया के उन इलाकों में जहाँ जंग नहीं है
बच्चे बड़े होंगे
मेरे यहाँ बम गिरेगा
तो मैं मर जाऊँगी
मैं मरना नहीं चाहती!

•शाना, आठ वर्ष, चंडीगढ़



● अनुश्री सोनी, तीसरी, महीदपुर, उज्जैन, म. प्र.

पाठक लिखते हैं

चकमक बच्चों के लिए ही नहीं बड़ों के लिए भी पठनीय है। मुझे बच्चों की रचनाएँ पढ़ना अच्छा लगता है।

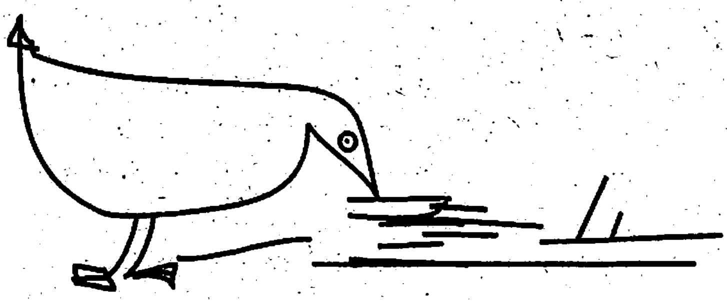
चकमक के अगस्त, 1990 के अंक में मेरी एक कहानी 'नन्हे चूजे की दोस्त बिल्ली' छपी थी। इसमें एक भोला चूजा जब पहली बार एक बिल्ली देखता है, तो वह उसे बड़ी अच्छी लगती है। वह उसके साथ खेलने लगता है। बिल्ली का मन भी उसकी भोली शरारतों पर रीझ गया और वह उसकी दोस्त बन गई। उसने नन्हे-प्यारे जीवों का शिकार करना भी छोड़ दिया।

वास्तव में ऐसा होना असंभव है। अतः मैंने एक काल्पनिक कहानी लिखी थी। लेकिन आज थाईलैण्ड के 'पिचिट' गाँव में ऐसा ही हो रहा है। दो साल की बिल्ली 'हुआन' को किसी चूजे से तो नहीं, पर एक चूहे के बच्चे से प्यार हो गया है।

लगभग पाँच माह पहले उसे एक अलमारी में एक चूहे का बच्चा मिला। उसे देखकर हुआन के मन में उसके प्रति प्रेम उमड़ आया। हुआन की मालकिन के अनुसार उसने अन्य चूहों की भाँति उसे नहीं खाया। अब दोनों साथ खेलते हैं, साथ खाते हैं और साथ ही सो जाते हैं। उन्होंने चूहे का नाम 'जैरी' रख दिया है। इस गाँव में उनकी दोस्ती का नजारा देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते रहते हैं।

एक अख़बार में यह खबर पढ़कर मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने सोचा, क्यों न यह बात मैं आप सब को भी बताऊँ।

● रावेन्द्रकुमार 'रवि', नैनीताल उ.प्र.



● प्रशांत कुमार पारे, के. जी. 2, भोपाल, म. प्र.

यहाँ से काटें

चकमक
सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर

माह .... से

चकमक भेजना शुरू करें–

नाम ....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन ☐☐☐☐☐☐

सदस्यता शुल्क रु. ....

माह/वर्ष के लिए मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से भेज रहे हैं।

नाम एवं हस्ताक्षर

सदस्यता दरें

छह माह	:	50.00 रुपए
एक साल	:	100.00 रुपए
दो साल	:	180.00 रुपए
तीन साल	:	250.00 रुपए
आजीवन	:	1000.00 रुपए

आजीवन सदस्यता के साथ आपके किसी दोस्त के लिए एक साल तक चकमक उपहार में भेजी जाएगी।

सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से 'एकलव्य' के नाम में इस पते पर भेजें –

एकलव्य,
ई–1/25, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल 462 016 (म. प्र.)

भोपाल से बाहर के चेक से शुल्क भेजते समय कृपया 15.00 रुपए बैंक चार्ज अतिरिक्त जोड़ें।

पाठक लिखते हैं

चकमक

खेलो खेल सीखो विज्ञान
माथापच्ची से मिलेगा ज्ञान
कविता कहानी हमें खूब भाते
और चुटकुले हमें हँसाते
वर्ग पहेली कागज का खेल
यह तो कराता है बच्चों में मेल
खेलते हैं बच्चे मैदानी खेल
छुकछुक करती आती रेल
खुश हो जाते हैं बच्चे
जब आती है चकमक
इसीलिए तो सबके मन को
भाती है चकमक॥

● **दिनेश कुमार बिनौले, सतवास, देवास, म.प्र.**

चकमक का उपहार

अगर आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं तो अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों या चकमक का उपहार देना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....
....

मोहल्ला ....
डाकघर ....
ज़िला ....
पिन ☐☐☐☐☐☐
....
....

यहाँ से काटें

चकमक का जून, 99 अंक प्राप्त हुआ। हार्दिक आभार। इस बार की बात पढ़ा। आपकी समस्याओं से अवगत हुआ। यह निर्विवाद सत्य है कि चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के रूप में बेजोड़ है। हिन्दी में वैज्ञानिक विषयों के लेखक कम हैं, खासकर बच्चों की ग्राह्य क्षमता के अनुकूल रोचक, सहज और बोधगम्य लेखन करने वाले। इसके बावजूद भी 'औरन को शीतल करे . . ' जैसी रचनाएँ आप प्राप्त कर लेते हैं। किन्तु पत्रिका अपने बूते पर खड़ी नहीं हो पा रही है। ए.एच. व्हीलर और सेंट्रल न्यूज़ एजेंसी के व्यावसायिक सम्बल भी काम नहीं आए। चकमक के स्वतंत्र ग्राहक बनने चाहिए यह अधिक कारगर और अर्थपूर्ण है। लेकिन थोक ग्राहक जैसे शिक्षा विभाग से टूटा क्रम फिर से जोड़ना क्या एकदम सम्भावनाहीन है? विज्ञापन की दिशा में भी पूरा ज़ोर लगाया जाना चाहिए। चकमक एक प्रयोजन के तहत निकाला जा रहा है। इसकी तयशुदा दिशा को छोड़कर इसे हिंसा, आतंक, सनसनी और विकृत सेक्स की तरफ मोड़कर कॉमिक्स तो बनाया नहीं जा सकता। ऐसी स्थिति में सुरुचि के इस संकट कालीन दौर में संघर्ष तो करना ही पड़ेगा। अंत में मंगलकामनाओं के साथ।

● **चित्रेश**
जासापारा, गोसाईगंज, सुलतानपुर, उ.प्र.

आदरणीय सम्पादक जी, नमस्ते।
साथ ही इतनी अच्छी पत्रिका छापने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। आपकी पत्रिका चकमक रोचक होने के साथ-साथ विज्ञान की बातें, कबाड़ से कला इत्यादि भी सिखाती है। मेरी कामना है कि चकमक चाँद और सूरज की तरह दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करे।

● **सोनम चतुर्वेदी**
डुमराँव, बक्सर, बिहार

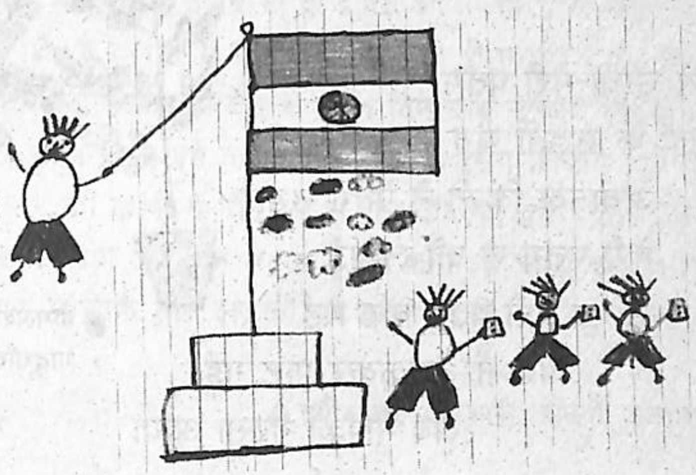
मेरा नाम आशीष कुमार साहू है। मैं कक्षा आठवीं का छात्र हूँ। मुझे कागज़ के खिलौने बनाना अच्छा लगता है। आप चकमक में जो कागज़ के खिलौने बनाना सिखाते हैं, वे मुझे बहुत ही अच्छे लगते हैं।

एक बार मैं टी.वी. देख रहा था। उस समय उसमें कागज़ की चिड़िया बनाना सिखा रहे थे। कागज़ के और कई खिलौने बनाकर रखे थे। उसमें हाथी भी थे। मुझे वह कागज़ का हाथी बनाना नहीं आता। अगर आपको वह हाथी बनाना आता हो तो चकमक में जरूर बनाना सिखाएँ।

● **आशीष कुमार साहू, देवरबीजा, दुर्ग, म.प्र.**



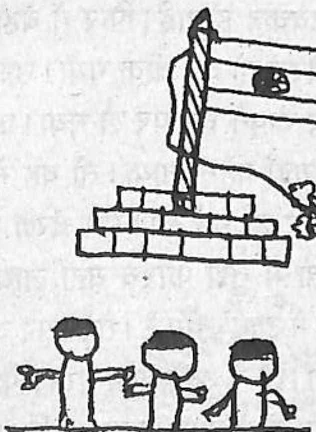
शाही फ़रमान



● गोरकी जेम्स, तीसरी, धार, म.प्र.

हमारे वज़ीर-ए आजम
प्रधानमंत्री जी ने
फ़रमान जारी किया है
'स्वतन्त्रता की स्वर्ण जयन्ती' पर
भारत देश महान में,
हमारे देश के हर एक
गाँव, शहर, गली-कूचे के,
हर एक मकान में,
रहने के स्थान में,
एक दिया टिमटिमाना चाहिए
यह एक दिया देश की,
तीस प्रतिशत जनता के बँगलों की
भारी जगमगाहट में खो जाएगा,
लेकिन दिया जलाना है,
क्योंकि मातृभूमि के लिए
हमारे 'प्यार' को वह दर्शाएगा।
इसी एक दिये के लिए,
तेल जुटाने में गरीब लोग,
एक दिन भूखे रह जाएँगे,
भूखे दो दिन फ़ाके कर जाएँगे,
लेकिन दिया जलना चाहिए,
क्योंकि इसे जलाकर ही,
वे देश के काम आ पाएँगे।





● नेहा गौरव गंजीर, पाँचवीं, पखांजूर, बस्तर, म. प्र.

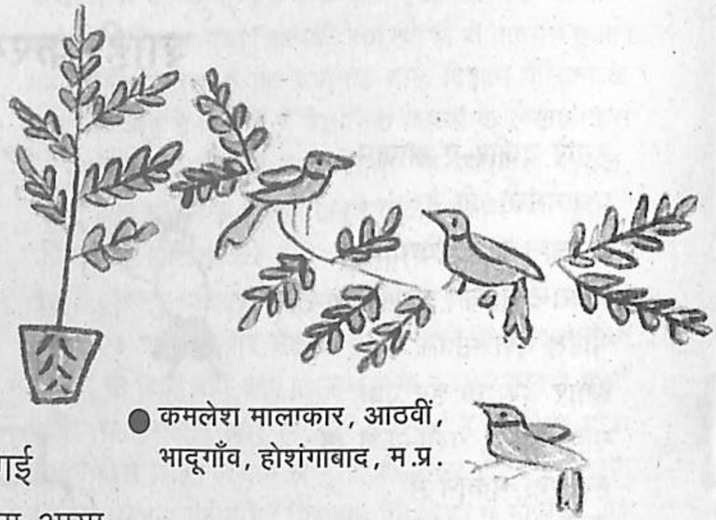
उनकी मेहनत, ईमानदारी,
और सज्जनता,
तब तक कोई मायने नहीं रखेगी,
जब तक वे दिया जला
खुद को देशभक्त
साबित नहीं करेंगे।
जब देश की तीस प्रतिशत जनता,
देश भक्त और सत्तर प्रतिशत
गद्दार हो जाएगी,
तब, आपकी सरकार कैसे चल पाएगी?
इसलिए
प्रधानमंत्री जी,
मेरी आपसे गुज़ारिश है
कि देशभक्ति के नाम पर
दिये न जलवाएँ।
जलाने ही हैं तो,
जब असमानता और
भ्रष्टाचार मिटा लें, तब जलाएँ
तब वे दिये दुनिया को जगमगाते हुए
जलेंगे –
क्योंकि वे आडंबर के नहीं
हर भारतीय की सच्ची
खुशी के प्रतीक होंगे।

● प्योली, आठवीं, वाराणसी, उ.प्र.

पतंग

सबसे ऊँची मेरी पतंग
बादलों के उड़ती संग
अचानक किसी ने पतंग उड़ाई
मेरी पतंग से की लड़ाई
मेरी पतंग कट गई
पेड़ में अटककर फट गई
अब मुझको गुस्सा आया
पतंग बनाई धागा लाया
मैंने फिर से पतंग उड़ाई
उसकी पतंग रह न पाई
उसकी पतंग कट गई
मेरी पतंग रह गई
सबसे ऊँची मेरी पतंग
बादलों के उड़ती संग

● दिनेश कुमार बिनौले, दसवीं, सतवास, देवास, म.प्र.



● कमलेश मालाकार, आठवीं, भादूगाँव, होशंगाबाद, म.प्र.

मेरी टक्कर

एक बार मैं बाजार गया था। फिर मैंने बस में से उतर कर रोड पार की तो एक मोटर-साइकिल वाले से टक्कर हो गई। फिर में बेहोश हो गया। हमारे गाँव के लड़के ने मुझे देखा तो वह चौंक गया। उसने मुझे उठाकर एक टैक्सी में बैठाया और अपने घर पर ले गया। जब मुझे होश आया तो मैंने कहा कि मुझे यहाँ कौन लाया। तो वह मेरे पास आया। उसने कहा कि तेरी टक्कर हो गई थी। मैंने देखा तो मुझे घबराहट हुई कि तेरा यह हाल तो मैं तुझे फौरन यहाँ लाया। अब तू अस्पताल चल क्योंकि तेरे सिर में चोट लगी है। तेरे सिर की पट्टी हो जाएगी और तू ठीक हो जाएगा। तो मैं अस्पताल गया। फिर ठीक हो गया और घर लौट आया। घरवालों ने मुझ पर हल्ला किया।

● नृपालसिंह, पंचमपुरा, मुरैना, म.प्र.



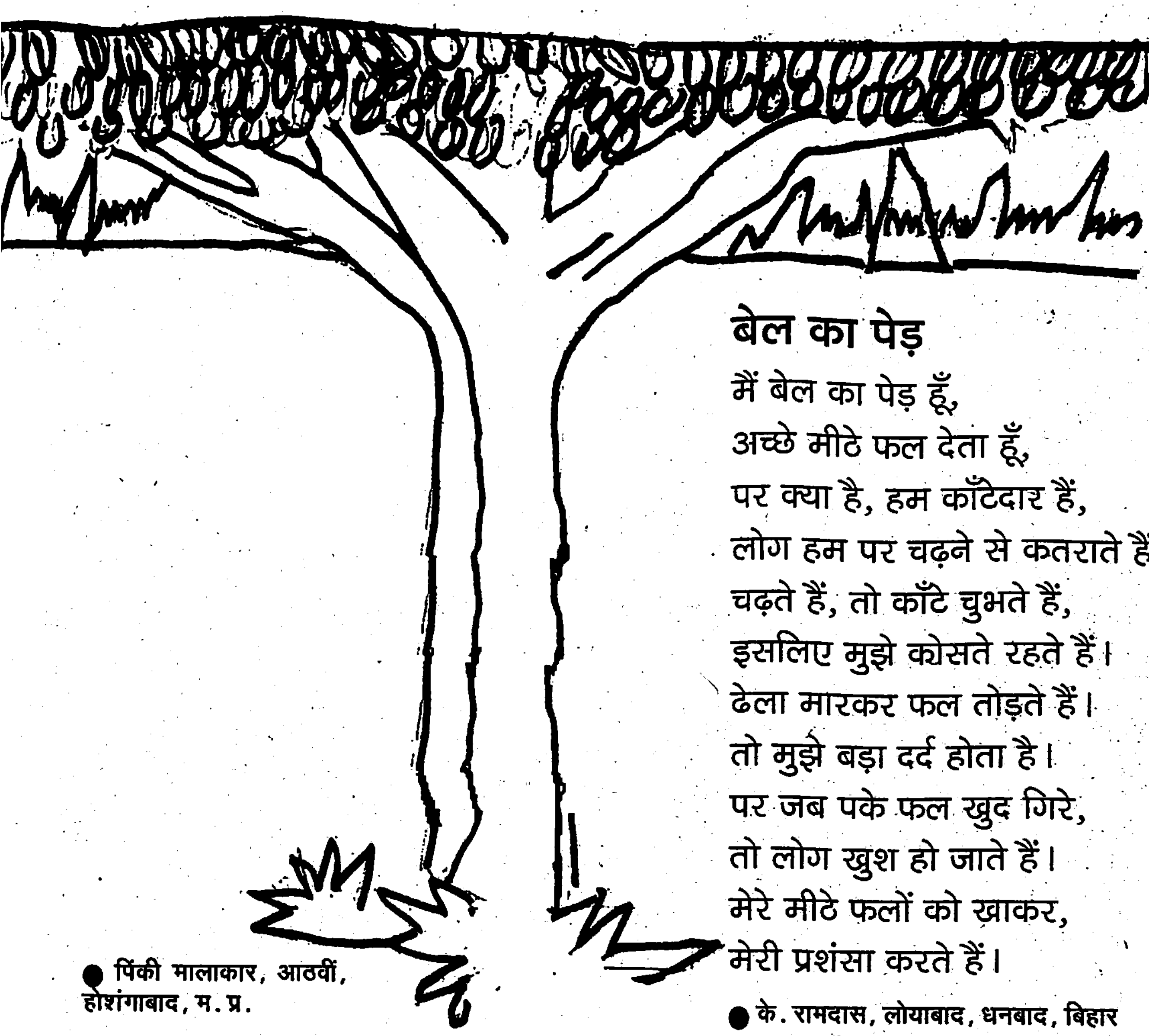
नाम नहीं लिखा



हमारे गुरु

हमारे छठी कक्षा के सर बड़े मजाकिया थे। कभी वे डाँटते भी थे तो हँसते-हँसते। वह कहानी में बहुत रुचि रखते थे। वे क्लास में कहानी लिखने के लिए कहते थे। उनमें से जो कहानी अच्छी लगती थी उन्हें ईनाम भी देते थे। एक दिन जब उन्होंने हमारी क्लास में टेस्ट लिया उसमें उन्होंने कहानी लिखने के लिए कहा। सब लोग लिखने लगे। सबने जब लिख लिया तो सबने सर को कॉपी दे दी। सर ने उन कॉपियों को देखा। उनमें से जो अच्छी लगी तो वह सर ने छापी और वह छापकर हमें कॉपी के साथ एक चकमक की किताब दी। हमारे क्लास में सिर्फ तीन लड़कों को कॉपी मिली। हम खुश थे। यह एक सच्ची घटना है।

● नवीन सिंह अधिकारी, सातवीं, अल्मोड़ा, उ.प्र.



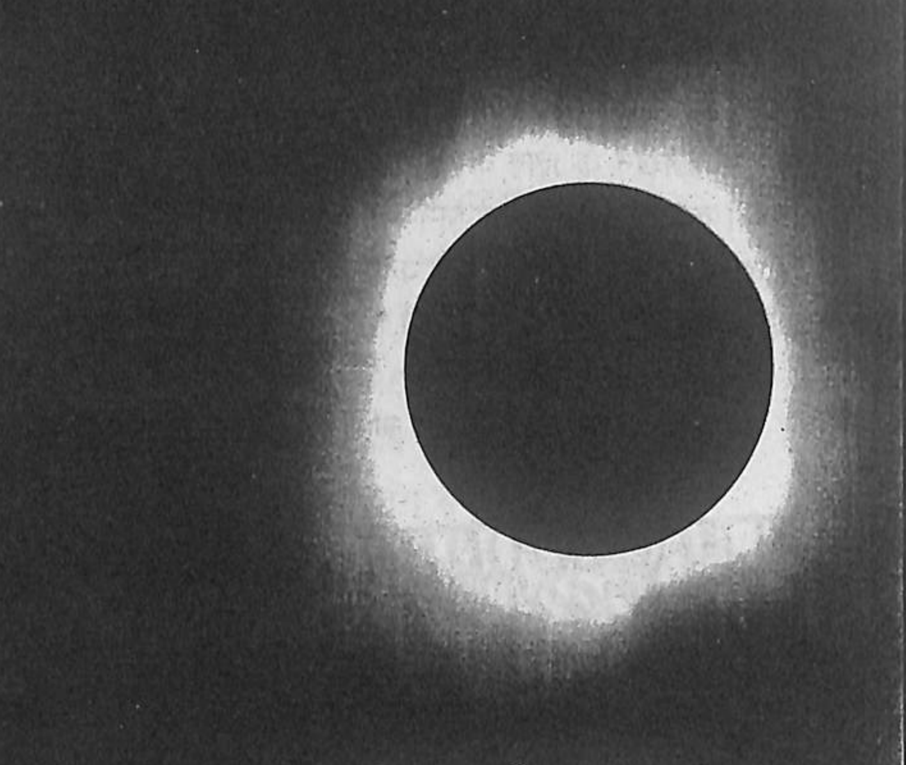
बेल का पेड़

मैं बेल का पेड़ हूँ,
अच्छे मीठे फल देता हूँ,
पर क्या है, हम काँटेदार हैं,
लोग हम पर चढ़ने से कतराते हैं,
चढ़ते हैं, तो काँटे चुभते हैं,
इसलिए मुझे कोसते रहते हैं।
ढेला मारकर फल तोड़ते हैं।
तो मुझे बड़ा दर्द होता है।
पर जब पके फल खुद गिरे,
तो लोग खुश हो जाते हैं।
मेरे मीठे फलों को खाकर,
मेरी प्रशंसा करते हैं।

● पिंकी मालाकार, आठवीं, होशंगाबाद, म.प्र.

● के. रामदास, लोयाबाद, धनबाद, बिहार

11 अगस्त, 1999 को खग्रास सूर्यग्रहण



दिन में रात !!

इस सदी का आखरी सूर्य ग्रहण। वह भी खग्रास। यानी जब चाँद सूर्य को पूरा-का-पूरा ढकता हुआ नज़र आएगा। यही तो होने जा रहा है 11 अगस्त को। दुनिया भर में सूर्य का अध्ययन कर रहे वैज्ञानिक और प्राकृतिक घटनाओं के प्रति कौतूहल रखने वाले तमाम लोग इस दिन का बेसब्री से इन्तज़ार कर रहे हैं।

इसके बाद अगला सूर्यग्रहण तो इक्कीसवीं सदी में ही होगा। वह भी नौ साल बाद। जुलाई 2009 में। यूँ तो इस बार भी भारत में खग्रास ग्रहण के दिखने की सम्भावना पर बहस जारी है क्योंकि यह बारिश का मौसम है। अगर उस दिन आसमान बादलों से पटा रहा तो यह अलौकिक नज़ारा होकर भीहमें नहीं दिखाई देगा। पर अगली सदी किसने देखी है? इसलिए हर कोई इस कोशिश में लगा है कि गुजरात (जहाँ बारिश कम और सूखा ज़्यादा होता है) में किसी जगह पहुँचकर ग्रहण देखने की कोशिश करें।

सूर्यास्त तो वैसे भी बहुत खूबसूरत दिखाई पड़ता है। पर 11 अगस्त को तो ऐसा लगेगा जैसे सूर्य दो बार अस्त हुआ। पहले जब ग्रहण लगेगा तब चाँद की

परछाई धीरे-धीरे सूरज को ढक लेगी और अंधेरा छाने लग जाएगा। यह करीब शाम छह बजे शुरू होगा। कुछ देर बाद फिर रोशनी होने लगेगी। चाँद अपने पथ पर सरकता हुआ आगे बढ़ जाएगा और उसकी परछाई भी सूरज का दामन छोड़ देगी। इसके लगभग आधेक घंटे बाद असली शाम ढलना शुरू होगी।

तुम भी यह मौका हाथ से जाने मत देना। अपने शहर से बाहर न जा सको तो भी आंशिक ग्रहण का नज़ारा तो कर ही सकते हो। घर से बाहर निकलने की इजाज़त न हो तो भी ग्रहण देखा जा सकता है। कैसे? यह अभी थोड़ी देर से बताते हैं। यहाँ इस नक्शे में जो लाइन दिखाई दे रही है, वही ग्रहण का पथ होगा। यानी ठीक लाइन पर जो जगहें हैं वहाँ तो खग्रास ग्रहण दिखाई देगा। और लाइन के ऊपर और नीचे तक फैली धुँधली पट्टी में ग्रहण आंशिक ही दिखेगा।

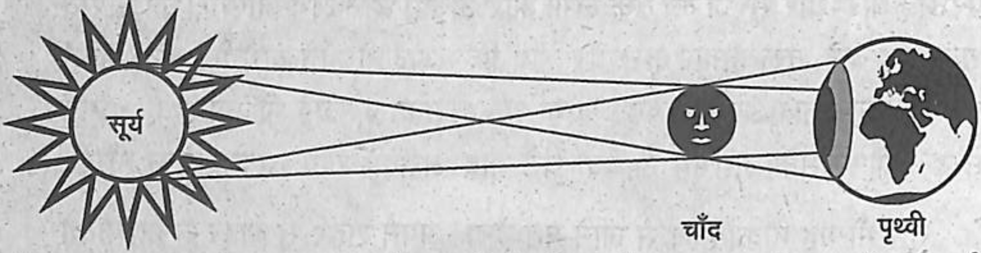


पहले इस बात को दोहरा लेते हैं कि ग्रहण होता कैसे है। अब तक तो तुम्हें पता चल ही गया होगा कि यह कोई राहू-केतु का गुस्से में सूरज को खा जाने का खेल नहीं है। यह तो सिर्फ चाँद, सूरज और पृथ्वी के परछाइयों का खेल है। इसे तुम टॉर्च और कुछ छोटी-बड़ी गेंदों की मदद से खुद प्रयोग करके भी देख सकते हो।

दरअसल बात यह है कि पृथ्वी से सूरज और चाँद की दूरी और उन दोनों के आकार के अनुपात में एक मज़ेदार सम्बंध है। सूरज चाँद से 400 गुना बड़ा है। और पृथ्वी से सूरज की दूरी चाँद की तुलना में 400 गुना ज़्यादा है। इस वजह से पृथ्वी से देखने पर ऐसा लगता है, जैसे चाँद और सूरज का आकार बिल्कुल एक समान है।

ऐसे में, जब भी अपने-अपने पथ पर घूमते हुए क्रमशः पृथ्वी, चाँद और सूरज एक ही लाइन में आ जाते हैं तो पृथ्वी से सूरज दिखाई नहीं देता। वह चाँद के पीछे छिप जाता है। इसी को सूर्यग्रहण कहते हैं। जब-जब सूर्यग्रहण होता है तो पूर्ण या खग्रास ग्रहण की पट्टी के आजू-बाजू एक आंशिक ग्रहण की पट्टी भी होती है। वह कैसे?

यह देखो।



इस तरह से जब सूरज और पृथ्वी के बीच चाँद आ जाए तो उसकी परछाई पृथ्वी पर पड़ती है। पृथ्वी पर जहाँ काला धब्बा है वहाँ रहने वाले लोगों के लिए उस पल सूरज बिल्कुल ओझल हो जाता है। हम कहते हैं कि इस इलाके में खग्रास ग्रहण लगा है। इसके चारों ओर जो धुँधली-सी पट्टी है वहाँ के लोगों के लिए सूरज का कुछ भाग छिपता है, कुछ नहीं। क्योंकि वहाँ से देखने पर यह तीनों ठीक सीधी लाइन में नहीं होते। तो यहाँ आंशिक ग्रहण होता है।

फिर यह स्थिति भी एक जगह स्थिर नहीं रहती। चूँकि पृथ्वी और चाँद दोनों गतिमान हैं, इसलिए इनकी चाल के साथ-साथ कुछ देर तक ग्रहण की स्थिति भी बदलती रहती है। इसीलिए हमें दुनिया के नक्शे पर ग्रहण की पट्टी दिखाई देती है। और जहाँ-जहाँ से ग्रहण दिखता है वहाँ भी हर जगह इसके शुरू होने और छूटने का समय अलग-अलग होता है।

हम शुरू में बात कर रहे थे कि ग्रहण कैसे-कैसे देखा जा सकता है। चलो अब उसी बात पर आते हैं। एक तो इस बात को गाँठ बाँध लो कि खुली नंगी आँखों से ग्रहण देखने के बारे में सोचना भी नहीं। ग्रहण अपने-आप में कोई खतरनाक चीज़ नहीं है, पर इसे नंगी आँखों से देखना खतरे से खाली नहीं। ग्रहण देखने के लिए हमें किसी ऐसे चश्मे की ज़रूरत होती है जो सूरज की रोशनी को कम से कम 10,000 गुना कम कर दे। आम तौर पर बाज़ार में मिलने वाले धूप के चश्मे भी इसके लिए सुरक्षित नहीं होते। हाँ, वेल्डिंग के काम में इस्तेमाल किए जाने वाले चश्मे ज़रूर उपयोग में लाए जा सकते हैं। एक और तरीका है – पुराने, इस्तेमाल न किए गए ऐसे एक्स-रे फिल्मों से देखने का जो पूरी काली हों। ऐसी 3-4 फिल्में एक के ऊपर एक रखकर उससे भी ग्रहण देखा जा सकता है। इसमें यह ध्यान रखना कि कहीं फिल्म का कोई हिस्सा घिसकर सफेद न हो गया हो।

घर के अन्दर बैठकर ग्रहण देखने का एक सुरक्षित तरीका है पिन-होल कैमरे का उपयोग करना। बस एक कागज़ ले लो और उसमें सुई या पिन से एक छेद बना लो – बन गया पिन-होल कैमरा। कागज को खिड़की के पास ऐसी जगह पकड़ो जहाँ उस पर सूरज की रोशनी पड़े। उसमें बने छेद से होकर सूरज



का एक छोटा-सा प्रतिबिम्ब दीवार या फर्श पर बन रहा होगा। ग्रहण वाले दिन इसी तरह से तुम सूरज की ओर न देखकर, उसका प्रतिबिम्ब बनाकर भी घर बैठे ही ग्रहण देख सकते हो।

अगर तुम ऐसी जगह रहते हो जहाँ खग्रास ग्रहण दिखने की सम्भावना है तो तुम्हें कई और मज़ेदार चीज़ें ग्रहण के पहले और बाद में दिखाई देंगी। तुम इन सब चीज़ों को देखने, महसूस करने की कोशिश कर सकते हो।

♦ खग्रास ग्रहण से थोड़ी देर पहले ज़मीन पर कुछ लहरदार पट्टियाँ या मोटी-मोटी लाइनें दिखाई देती हैं। इन्हें शैडो-बैण्ड्स कहते हैं। इन्हें आसानी से देख पाने के लिए ज़मीन पर सफेद कागज़ बिछाकर रखो। पिछले खग्रास ग्रहण (25 अक्टूबर, 1995) के समय हमने इन्हें देखने की कोशिश तो की थी पर ये हमें दिखाई नहीं दिए। इस बार फिर तुम भी कोशिश करना, हम भी करेंगे।

♦ पूर्ण ग्रहण से कुछ पल पहले जब चाँद सूरज को लगभग पूरा ढकने ही वाला होता है, तब कई बार कुछ सुन्दर से मोतियों की लड़ी-सी दिखाई देती है। कहते हैं कि यह चाँद के पहाड़ों के बीच की घाटियों में से आने वाले सूरज के प्रकाश के कारण दिखाई देता है।



♦ पिछली बार की एक घटना जिसे हम सब दोस्तों ने देखा था और जिसने हमें मंत्रमुग्ध कर दिया था, वह थी हीरे की अँगूठी। सूरज के पूरी तरह से ढँक जाने से ठीक पहले, पूरी तरह से अंधेरा छा जाने में जब ज़रा-सी कसर बाकी हो, तब सूरज किसी अँगूठी में जड़े हीरे की तरह चमचमाता हुआ दिखता है। बहुत ही शानदार दृश्य होता है वह।

♦ जब ग्रहण लग रहा हो तो वातावरण का तापमान भी गिरने लगता है। ठीक वैसे ही जैसे शाम होने पर गिरता है। तुम्हारे पास अगर थर्मामीटर हो तो तुम ग्रहण के समय के गिरते तापमान को भी रिकॉर्ड कर सकते हो। थर्मामीटर न हो तो भी इस समय हल्की सी ठण्ड की झुरझुरी को वैसे ही महसूस किया जा सकता है।

♦ फिर आखिर में आती है पूर्ण ग्रहण की बारी। जब पूरा-का-पूरा सूरज छिप जाए और सिर्फ उसके आस-पास का आग जैसा प्रभामण्डल दिखाई दे। यह नज़ारा भी कोई कम खूबसूरत नहीं।

इसके बाद धीरे-धीरे चाँद सूरज के सामने से हटने लगता है। एक बार फिर हीरे की अँगूठी और मोतियों की माला देखने का मौका मिलता है और फिर सबकुछ सामान्य होने लगता है। अंधेरा छँटने लगता है। तापमान सामान्य होने लगता है। फिर, जैसा इन पन्नों के दाहिनी तरफ वाले चित्रों में बना है, धीरे-धीरे सूरज दिखते-दिखते पूरा चमकने लगता है। और खेल खत्म!

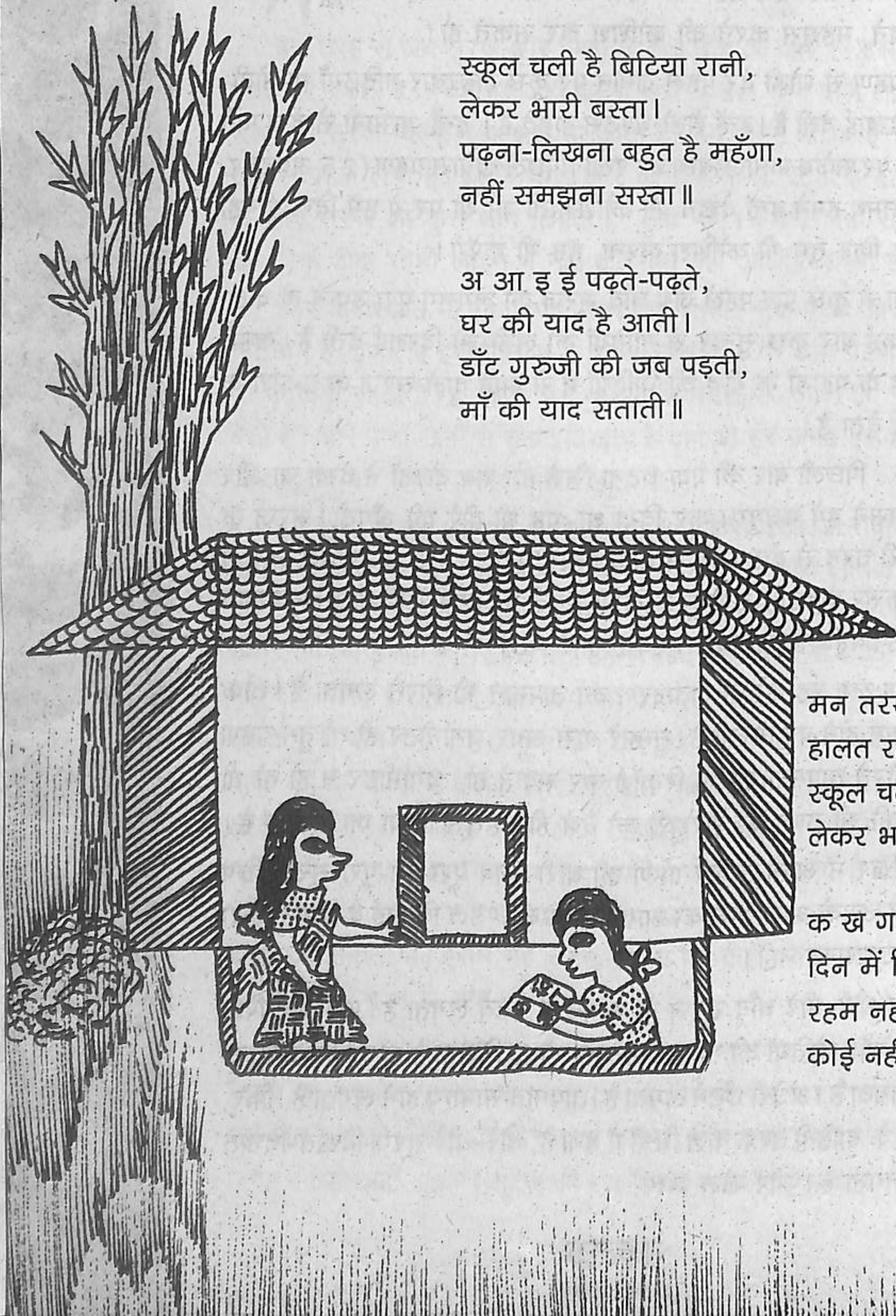




बिना प्यार का रस्ता

स्कूल चली है बिटिया रानी,
लेकर भारी बस्ता।
पढ़ना-लिखना बहुत है महँगा,
नहीं समझना सस्ता॥

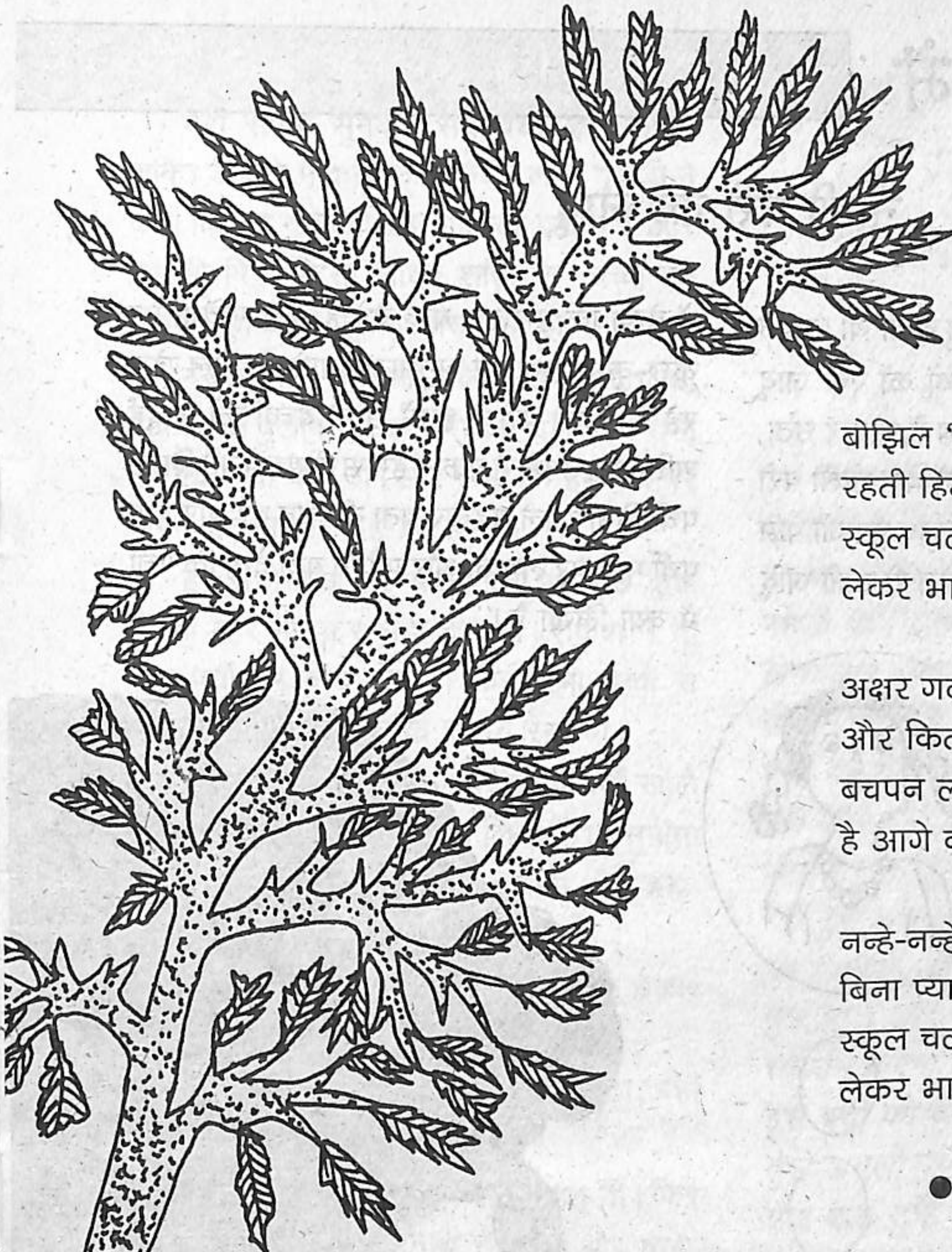
अ आ इ ई पढ़ते-पढ़ते,
घर की याद है आती।
डाँट गुरुजी की जब पड़ती,
माँ की याद सताती॥



मन तरसता लाड़-प्यार को,
हालत रहती खस्ता।
स्कूल चली है बिटिया रानी,
लेकर भारी बस्ता॥

क ख ग घ लिखते-लिखते,
दिन में दिखते तारे।
रहम नहीं करता है कोई,
कोई नहीं दुलारे॥





बोझिल 'होमवर्क' के चलते,
रहती हिम्मत पस्ता।
स्कूल चली है बिटिया रानी,
लेकर भारी बस्ता॥

अक्षर गढ़ना, गिनती लिखना,
और किताबें पढ़ना।
बचपन लगा दाँव पर होता,
है आगे को बढ़ना॥

नन्हे-नन्हे पाँव और है,
बिना प्यार का रस्ता।
स्कूल चली है बिटिया रानी,
लेकर भारी बस्ता॥

● जितेन्द्र कुमार तिवारी

● चित्र : परशाद सिंग कुशराम

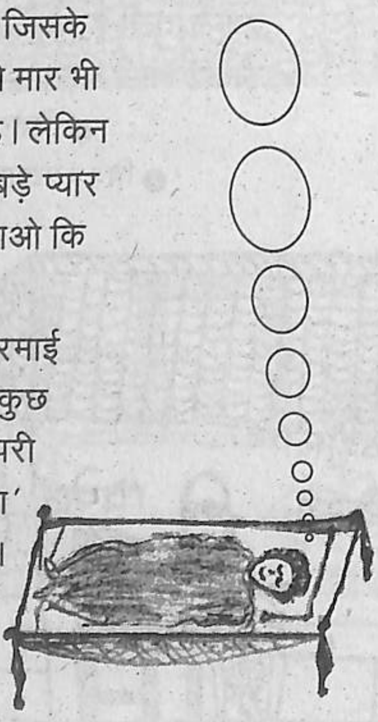


नीली परी का जादू

बहुत दिनों पहले मैंने एक सपना देखा था। सपने में एक नीली परी बहुत सारे बच्चों को एक जादू दिखा रही थी। उस दिन सुबह जब मैं सोकर उठा, तब से स्कूल जाने तक मेरे मन में बस नीली परी का जादू ही समाया था। स्कूल में जब गुरुजी पढ़ा रहे थे तब भी मैं अपने दोस्त मोहित से उसी जादू के बारे में बात कर रहा था।



हम दोनों बातों में इतने खो गए कि पता ही नहीं चला कि गुरुजी कितनी देर से हमें ही देख रहे हैं। जब गुरुजी ने खड़े होने के लिए कहा तब समझ में आया कि हम कोई बड़ी ग़लती कर गए हैं। जिसके बदले में हमें छड़ी की मार भी झेलनी पड़ सकती है। लेकिन उस दिन गुरुजी ने बड़े प्यार से कहा, 'सबको बताओ कि बात क्या है।'



गुरुजी की नरमाई देखकर मेरी हिम्मत कुछ बढ़ी। मैंने नीली परी वाली 'जादू कथा' सुनाना शुरू कर दिया। सब बच्चे ध्यान से मेरी बातें सुनने लगे। ''मैंने सपने में देखा कि हम सब बच्चे बैठे हैं और पर्चियों पर कुछ-कुछ लिखकर अनुमान लगाने का खेल खेल रहे हैं। नीली परी ने हममें से दो बच्चों को जादुई शक्ति दी। उनमें से एक ने हम सभी बच्चों की लिखी पर्ची बिना खोले पढ़कर बता दी। वह हर बार एक पर्ची माथे पर लगाता और फौरन बता देता कि पर्ची में क्या लिखा है।''



मेरा सपना सुनकर सब बच्चे इस जादुई शक्ति के बारे में कानाफूसी करने लगे। गुरुजी ने कहा कि यह खेल तो वह भी दिखा सकते हैं और वह भी बिना किसी जादुई शक्ति के। बच्चों को गुरुजी की बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

गुरुजी ने दो बच्चों राकेश और सुनीता को अपने पास बुलाकर कुछ समझाया। फिर हम सभी को एक-एक पर्ची दी। और कहा कि हम उन पर अपने मन से जो चाहें वह लिखें।

हम सभी ने अपनी-अपनी पर्ची पर कुछ-कुछ लिखा और मोड़कर घड़ी कर दी। राकेश ने भी एक पर्ची पर कुछ लिखा। फिर सभी बच्चों से पर्चियाँ लेकर सुनीता के सामने रख दीं।

फिर राकेश ने कहा, ''सुनीता पर्चियाँ खोले बिना बता देगी कि उनमें क्या लिखा है।'' सुनीता ने एक पर्ची उठाई उसे माथे से लगाया और कहा, 'परी का खेल।'

''हाँ, यह तो मैंने लिखा है।'' राकेश उछल पड़ा।

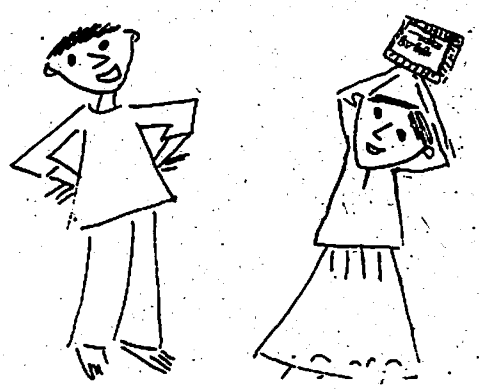
सुनीता ने उस पर्ची को खोलकर पढ़ा, ''हाँ ठीक है।''

और पर्ची फाड़कर एक तरफ रख दी। फिर दूसरी पर्ची उठाई उसे माथे से छुआ और कहा, ''बड़ी सी छड़ी।''

कमल ने कहा, ''यह तो मैंने लिखा है।''

इसी तरह वह हर पर्ची को बिना पढ़े बताती रही। अब तो सब बच्चों के मन में यही सवाल था कि आखिर इस जादू का रहस्य क्या है।

गुरुजी ने बताया कि यह एक छोटा-सा दिमागी खेल है। इसमें किसी जादुई शक्ति का हाथ नहीं है। गुरुजी ने फिर इस खेल का रहस्य बताया।



यह खेल तुम अपने दोस्त की मदद से बड़ी आसानी से दिखा सकते हो। तुम अपने दोस्त से सलाह करके पहले ही यह निश्चित कर लो कि पहली पर्ची उठाने पर तुम जो बोलोगे वह क्या होगा और तुम्हारे दोस्त को कहना है कि 'हाँ यह तो मैंने लिखा है।' और इस प्रकार जब तुम पहली पर्ची को खोलकर झूठमूठ चेक करोगे तो तुम्हें एक और बच्चे के द्वारा लिखी हुई बात पता चल जाएगी। अब तुम्हें इस बात को याद रखना है।

तुम अब एक दूसरी पर्ची उठाओ और माथे पर लगाओ। जो तुमने पहली पर्ची में पढ़ा था, वही तुम बोल दो। कोई न कोई तुम्हारी बात का समर्थन करेगा कि वह तो उसने लिखी है। अब इस पर्ची को चेक करने के लिए तुम खोलो तो तुम्हें अगली पर्ची की बात पता चल जाएगी। हाँ, एक बात तुम्हें याद रखनी होगी। वह यह कि तुम्हारा सहायक बना तुम्हारा दोस्त अपनी पर्ची सबसे नीचे रखे। इसलिए लिखी हुई पर्चियाँ इकट्ठी करने का काम उससे ही करवाना है।

हम सब बहुत खुश हुए।

और छुट्टी होने पर जादू का यह खेल कई बार खेला।

शायद नीली परी को यह पता चल गया था कि उसके जादू का खेल खत्म हो चुका है। इसलिए वह फिर कभी सपने में नहीं आई।

प्रस्तुति : सुशील शुक्ला

मैं बाजार गया

मैं एक दिन बाजार गया। मैं बस से उतरा तो मैंने सोचा कि यहाँ से बाजार कम से कम 2 किलोमीटर है। फिर बाद में अपने गाँव के लड़के के मकान पर गया। और उससे साइकिल ली फिर बाद में बाजार गया। रास्ते में एक मोटर साइकिल वाले ने टक्कर दे दी। मेरे पैर में चोट आ गई। फिर मैं एक रिक्शे वाले से कहा कि तुम मुझे पुलिस चौकी ले चलो। उसने कहा कि मैं वहाँ तक के पाँच रुपए लूँगा। मैंने कहा कि ठीक है और वह मुझे पुलिस चौकी ले गया। मैंने रिपोर्ट की। पुलिस ने उस मोटर-साईकिल वाले को पकड़ लिया और थाने में बन्द कर दिया। उसके बाद में मैं डॉक्टर के पास गया। डॉक्टर ने पूछा कि यहाँ काय से लगी है। तब मैंने कहा कि रोड पर एक मोटर-साईकिल वाले ने टक्कर दे दी। इसलिए लग गई। डॉक्टर ने मुझे दवा दी और कहा कि चार दिन बाद फिर दिखा जाना । मैं वापिस घर आया। माता-पिता नें पूछा कि यह किसने दी है। तब मैंने कहा कि एक मोटर-साईकिल वाले ने टक्कर दे दी। अब तो पैर ठीक है।

● राजेन्द्र वघेल, पंचमपुरा, मुरैना, म.प्र.



● डामनलाल चंदेल, चिमलखेड़ी, महाराष्ट्र

कुत्ते ने काटा

एक बार मैं और मेरा मित्र, हम दोनों अमरूद खाने के लिए गाँव से बाहर एक वृक्ष पर गए। तो जब पेड़ के नीचे पहुँचे तो एक कुत्ता पेड़ के नीचे बैठा था। हम लोगों ने उसे भगाने के लिए पत्थर मारा तो वह हम लोगों की तरफ झपटा। हम लोग भागे तो कुत्ते ने मुझे काट लिया। मेरे पैर से खून निकलने लगा। मेरा मित्र मुझे अपने कन्धे पर रखकर डॉक्टर के घर ले गया। डॉक्टर ने इन्जेक्शन लगाया और मल्हम-पट्टी की और दवाइयाँ दीं। तब कहीं मेरा पैर ठीक हो सका। उसी दिन से मैंने अमरूद खाने के लिए कान पकड़कर कहा कि आज से मैं अमरूद खाने नहीं जाऊँगा।

● अजय जैन, आठवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.

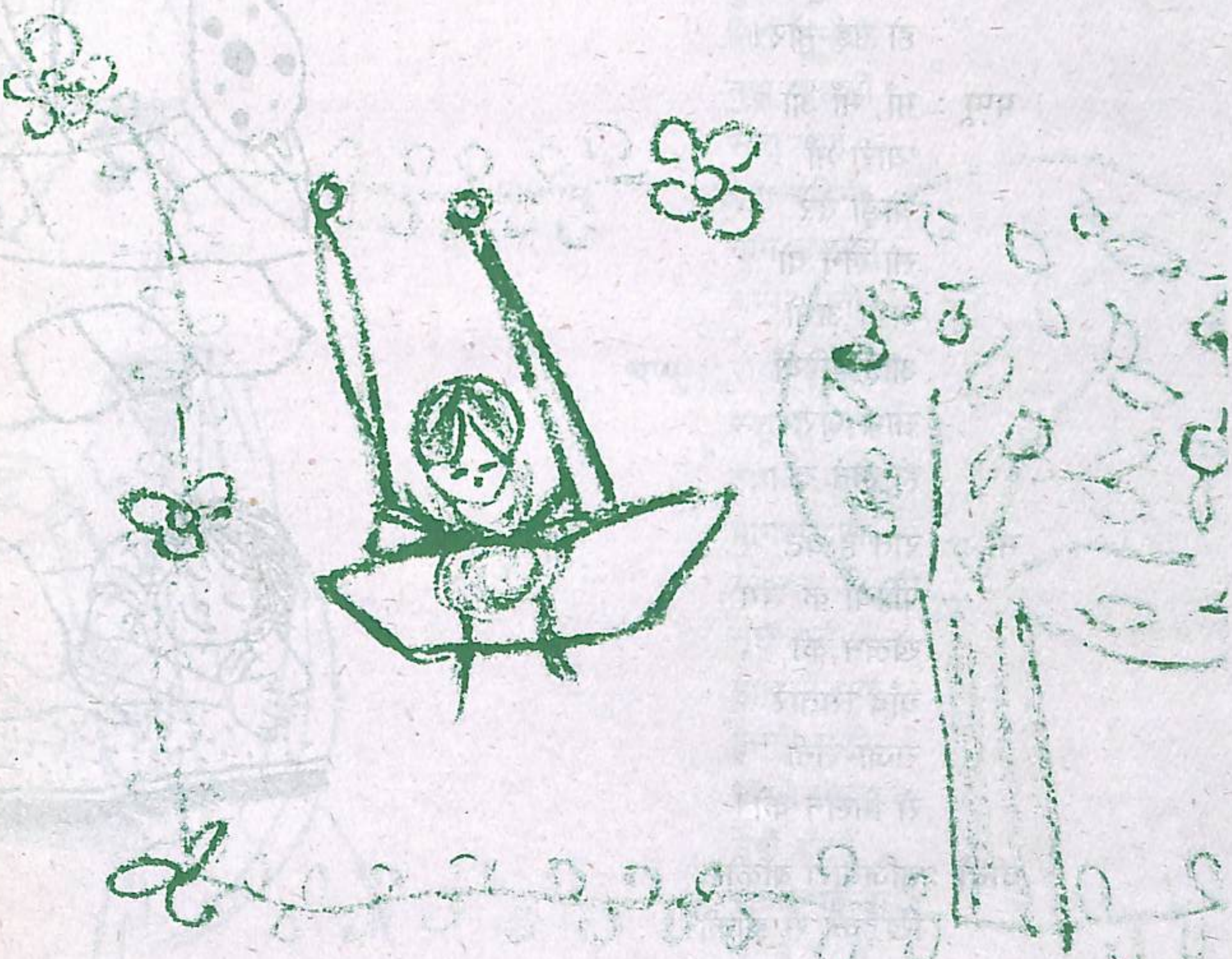


नाना, नानी का गाँव

अर्द्धवार्षिक परीक्षा समाप्त होते ही हमें सात दिन का अवकाश मिला। मैं इन सात दिनों की छुट्टियाँ मनाने के लिए मेरे नाना-नानी के गाँव गया। मेरे गाँव से 19 कि.मी. दूर नानी का गाँव है। वहाँ पर मेरे मौसी के लड़के के साथ हम खेत पर जाते थे। नदी भी पास में ही थी। इस शीत ऋतु में हम सुबह 7 बजे उठते थे। उठने के बाद हम सुबह चाय पीते थे और नदी पर घूमने के लिए जाते थे। फिर आकर खेत की तरफ जाते थे फिर नहाने के लिए नदी जाते थे। फिर वापिस आकर खाना खाते थे। लगभग 12 बज जाते थे। फिर हम कहानी, चुटकुला, सामान्य ज्ञान की पुस्तकें पढ़ते थे। इस प्रकार का हमारा दैनिक कार्य था। इस तरह मेरी सात दिन की छुट्टियाँ बीत गयीं थीं। मुझे नाना नानी का गाँव बहुत अच्छा लगता है।

● महेन्द्र कुमार भामावत, ओगणा, उदयपुर, राजस्थान

● चित्र : राशि शिन्दे, चौथी, मंदसौर, म. प्र.





पप्पू होनहार

● शुक्ला चौधुरी



पात्र–पप्पू (पाँच साल का बच्चा) माँ, पापा, दादी, दीदी

(सुबह का वक्त। माँ बेटे को जगा रही है)

माँ : चंदा भागा
सूरज जागा
उठो पप्पू
आलस छोड़
चिड़िया चहकी
बगिया महकी
फैली धूप
हो गई भोर।

पप्पू : माँ, माँ ओ
प्यारी माँ
थोड़ी देर
सो लेने दो
अभी अभी
आईं परियाँ
साथ ज़रा
हो लेने दो।

माँ : रात है बेटे
परियों के संग
खेलने की,
चाँद सितारे
राजा-रानी
से मिलने की।

दादी : उजियारा बाँकी
खिड़की से झाँकी





हो जाते सारे
छू छू छू..
बिल्ली म्याऊँ
बोली जाऊँ
पिल्ला मोती
कूँ कूँ कूँ।
क ख ग की
अमृत वाणी
जाने सो
गुरु ज्ञानी,
जा पप्पू
स्कूल जा
पढ़कर आ
मुझे पढ़ा
नित सुनाऊँ
तुझे कहानी
सात भाई
इक बहिनी
नाम उसका
चम्पा रानी।

पप्पू : रोज़-रोज़ का
स्कूल जाना
लगता जैसे
पागलखाना
मास्टर जी की
मूँछें बड़ी
हाथ में एक
लम्बी छड़ी,
टॉफी-बिस्कुट
नहीं बँटते
थका पहाड़ा
रटते रटते,

ऊँची-ऊँची
लम्बी दीवारें
काँपता मैं
डर के मारे।

दादी : उठो जल्दी
छोड़ो बहाना
रोज़-रोज़ का
बेसुरा गाना,

माँ : धूप भी आई
नदी नहाई
खोला नल
झर झर झर
पापा जागे
दीदी तैयार
लाल रिबन
फर फर फर।





पापा : बिस्तर छोड़ो
करो वर्जिश
उठक-बैठक
लगाओ बीस
दाँत-मुँह की
साफ-सफाई
नहाकर पिओ
दूध-मलाई
बस्ता बाँधो
जाओ स्कूल
अ आ इ ई
न जाना भूल।

दादी : जिद न करो
उठो चुपचाप
बनोगे क्या



अँगूठा छाप
मैं भी अगर
पढ़ती-लिखती
गिटपिट गिटपिट
अंग्रेज़ी बोलती
बीते दिन
करते काम
बुढ़ापा आया
भजते राम।

पप्पू : *(दादी के गले में बाँहें डाल)*
दादी दादी
प्यारी दादी
चलो साथ
खेलें दादी
बादल बादल
तितली तितली
इत्ता पानी
छोटी मछली
बूढ़ा बरगद
काना राजा
चंदू डाकू
मोटा ताजा
पूरी करो
अधूरी कहानी
मरी कैसे
बन्दर की नानी।



दादी : *(पप्पू को प्यार करते हुए)*
पढ़ने से जो
चुराए जी
उसकी होती
नाक नीची
रहते खाली



दोनों हाथ
कोई न खेले
उसके साथ,
आगे न वो
बढ़ पाएगा
पीछे ही
रह जाएगा,
हीरा मोती
दूर-दूर
चाँद-सितारे
उससे दूर,
अक्षर दिखते
गोल-गोल
मिलते अंक
गोल-गोल,
कोई न करता
प्यार-दुलार
खाली रहता
ज्ञान भंडार
नहीं सुनाती
दादी कहानी
रूठी रहती
दीदी सयानी

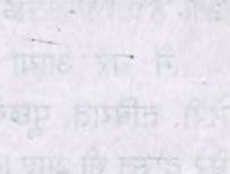
दीदी : न जाओगे
स्कूल भैया
ले लूँगी
सारे खिलौने
छुक छुक गाड़ी
बंदर मदारी
भालू शेर
गुड्डा सलोने
कुबड़ा ऊँट





काठ का टट्टू
डोरी पतंग
घूमता लट्टू
साइकिल मोटर
उड़ता प्लेन
कलम दवात
कॉपी पेन

पप्पू : दादी दादी
ओ दादी
रूठो नहीं
तुम दादी,
दीदी दीदी
ओ दीदी
रूठो नहीं
तुम दीदी,
मैं पढूँगा
स्कूल जाऊँगा
मास्टरजी का
कहा मानूँगा
रिंकू-टिंकू
भोलू-श्याम
स्कूल में
लिखा दो नाम
मिलकर
साथ जाएँगे
बाँटकर
हलुआ खाएँगे,
झटपट करदो
मुझे तैयार
बनूँगा मैं
पप्पू होनहार।



सभी चित्र : धनंजय



मेरी बकरी और उसके बच्चे

मेरी दो बकरी थीं, उसके दो बच्चे थे। मैं उन दोनों बकरियों को चराने गया। मैं बहुत दूर गया था। इतने में मेरी बकरी घास चरने लगी। वहाँ पर एक कुत्ता था। मेरी बकरी चिल्लाने लगी। दूसरी बकरी ने उसे देख मुझसे कहा। मैं उस कुत्ते को भगाने गया तो वह मेरे ऊपर भौंकने लगा। मैंने उसे मार डाला। वो मर गया। उसने मुझे काट भी लिया था। मैं सीधा अस्पताल गया। डॉक्टर ने कहा की तुम्हें शहर जाना पड़ेगा और मेरे पापा और मम्मी मुझे लेकर शहर गए। मेरी मम्मी ने मेरे छोटे भाई को मेरी आपा के यहाँ छोड़ दिया। मेरे बारह इंजेक्शन लगाए और मुझे वहाँ भर्ती कर दिया। फिर मुझे दस दिन् में छुट्टी दी।

मैं घर आया तो सब मेरी तबियत पूछने आए। मेरे दोस्त भी आए। मैं स्कूल भी नहीं गया था। फिर मैं स्कूल गया। मेरी अपसेंट बहुत लग गईं थी। मैं काम में पीछे रह गया था। मेरे दोस्त ने मुझे कॉपी दी। फिर मैंने काम पूरा किया। मैंने पहले हिन्दी में पूरा किया, फिर गणित में, फिर विज्ञान में, फिर सामाजिक विज्ञान में। इस तरह मेरा काम पूरा हो गया।

मेरी अब एक ही बकरी है। और उसके बच्चे। मेरे पापा फिर एक बकरा लाए और मैंने उसे पाला और चारा लाया। फिर वह बकरा ईद के दिन कुर्बान हो गया।

● चित्र और रचना : हबीब अनवर राही, छठवीं, जावद, नीमच, म.प्र.



एक मज़ेदार खेल

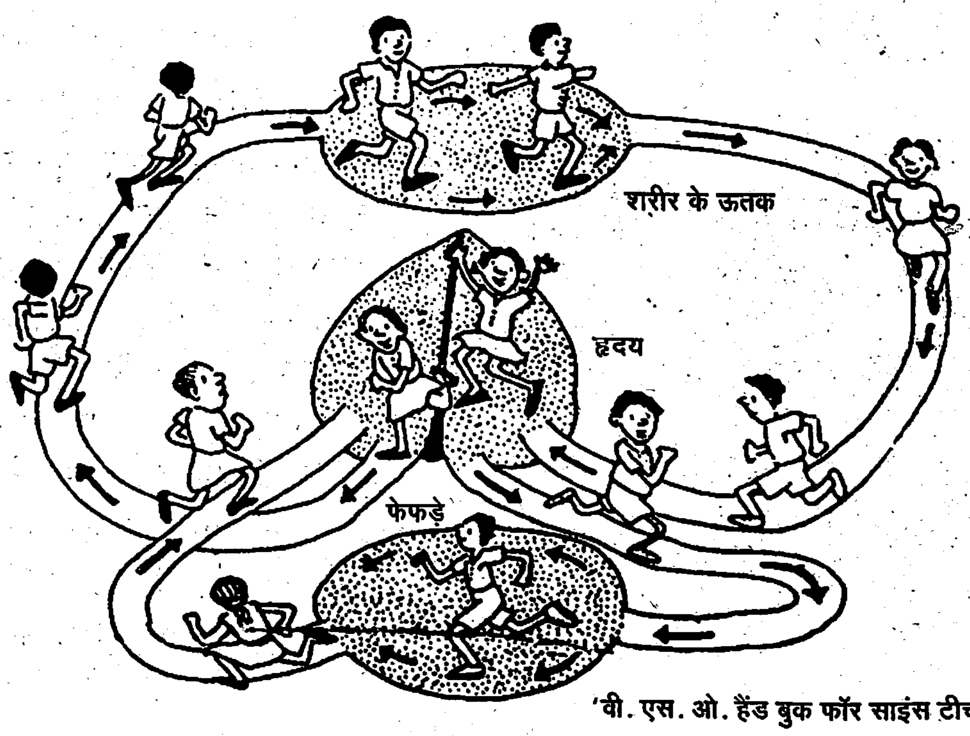
छिलक-छाई तुम रोज ही खेलते होगे। कभी किसी की छूने की बारी आती होगी तो कभी किसी की।हम इसी छिलक-छाई वाले खेल को थोड़ा-सा बदलकर खेलते हैं। इस खेल के लिए पहले तुम्हें आँगन या मैदान में तीन गोले बनाने पड़ेंगे। यह गोले या तो तुम चॉक से या फिर किसी रस्सी से बना सकते हो।

खेल यह है कि तुम सब दोस्तों को कुछ नियमों के अनुसार एक गोले से दूसरे गोले में दौड़ते जाना है। लेकिन शर्त यह है कि पहले गोले से होकर तुम दूसरे गोले में तो जा सकते हो मगर तीसरे में नहीं। मतलब तुम सीधे पहले से तीसरे गोले में नहीं जा सकते। तीसरे गोले में जाने के लिए तुम्हें दूसरे गोले में जाना ही पड़ेगा।

दूसरा नियम होगा कि तुम एक ही दिशा में दौड़ सकते हो। मुड़कर दूसरी दिशा में दौड़ना गलत माना जाएगा। बिल्कुल वैसे ही जैसे घड़ी के काँटे घूमते हैं। मान लो मैं अपने साथी से बचते हुए दौड़ते-दौड़ते पहले गोले में आया, तो आगे दौड़ते हुए तीसरे गोले की बजाय दूसरे गोले में जाऊँगा। और फिर तीसरे में जाऊँगा। तीसरे गोले से निकलकर मुझे फिर दूसरे गोले में जाना पड़ेगा और दूसरे गोले में जाने के बाद ही मैं पहले गोले में जा सकता हूँ। जो तुम्हें छूने के लिए दौड़ेगा उसे भी इन्हीं नियमों का पालन करना पड़ेगा।

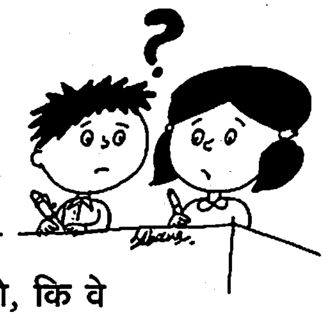
अब यह खेल खेलो और फिर एक बात सोचो। मान लो पहले गोले को हम शरीर के ऊतक का नाम दें, दूसरे गोले को हृदय मानें तथा तीसरे गोले को फेफड़े। तो जैसे तुम इस खेल को खेलोगे, बिल्कुल वैसे ही खून हमारे शरीर में बहता है।

यानि पहले शरीर के ऊतकों से हृदय में, फिर हृदय से फेफड़ों में फिर फेफड़ों से हृदय में और तब वापस हमारे शरीर में। खून को दौड़ लगाने के लिए दो बार हृदय के गोले से होकर गुजरना पड़ता है जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।

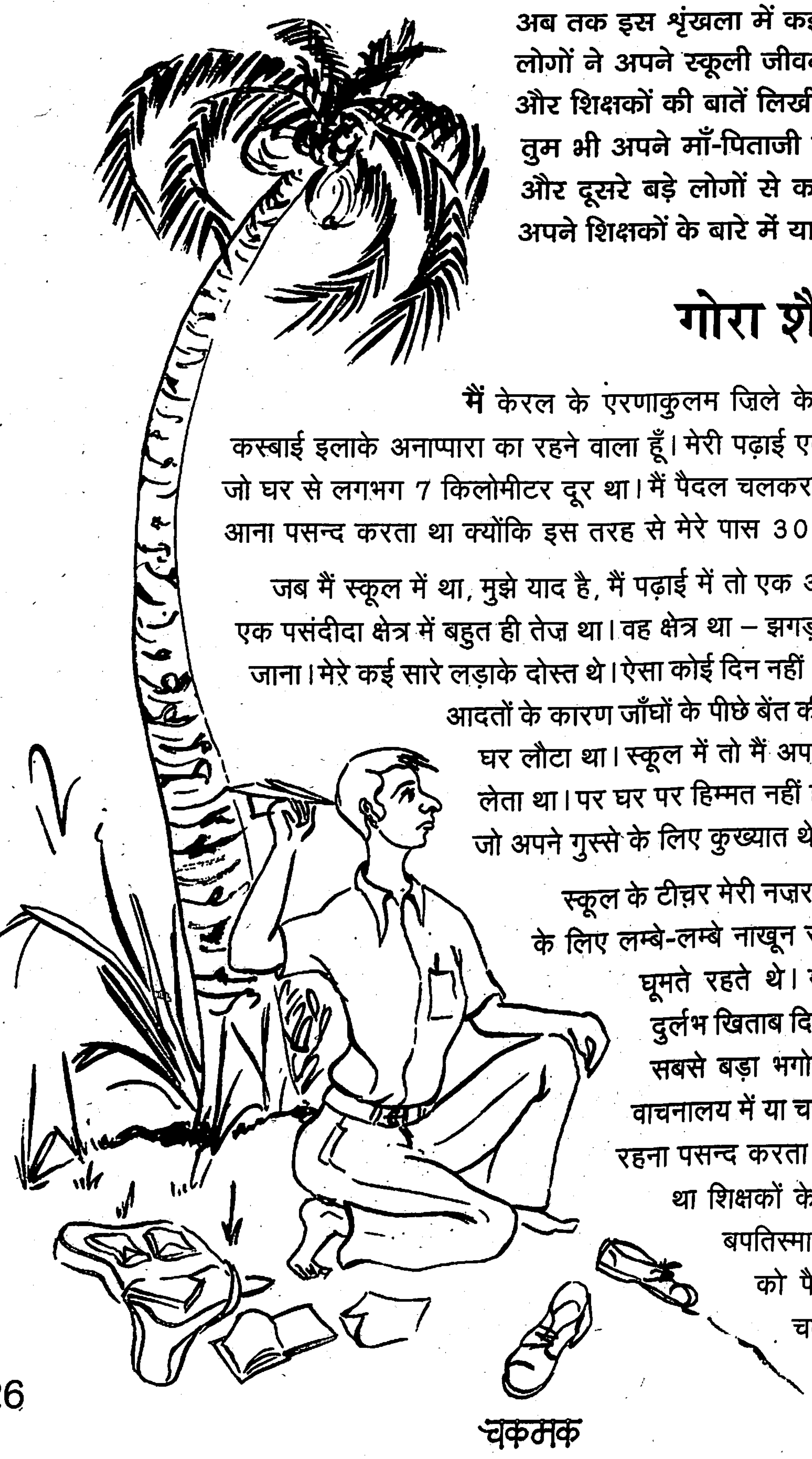


'वी. एस. ओ. हैंड बुक फॉर साइंस टीचर्स' से साभार

अब तक इस शृंखला में कई लोगों ने अपने स्कूली जीवन और शिक्षकों की बातें लिखीं। तुम भी अपने माँ-पिताजी से और दूसरे बड़े लोगों से कहो, कि वे अपने शिक्षकों के बारे में याद करके कुछ लिखें।



गोरा शैतान



मैं केरल के एरणाकुलम ज़िले के एक भीतरी पारम्परिक कस्बाई इलाके अनाप्पारा का रहने वाला हूँ। मेरी पढ़ाई एक मिशनरी स्कूल में हुई जो घर से लगभग 7 किलोमीटर दूर था। मैं पैदल चलकर स्कूल जाना और वापस आना पसन्द करता था क्योंकि इस तरह से मेरे पास 30 पैसे बच जाते थे।

जब मैं स्कूल में था, मुझे याद है, मैं पढ़ाई में तो एक औसत छात्र था पर अपने एक पसंदीदा क्षेत्र में बहुत ही तेज़ था। वह क्षेत्र था – झगड़ना और लड़ाई में उलझ जाना। मेरे कई सारे लड़ाके दोस्त थे। ऐसा कोई दिन नहीं था जब मैं अपनी शरारती आदतों के कारण जाँघों के पीछे बेंत की मार के निशान के बगैर घर लौटा था। स्कूल में तो मैं अपनी सारी शरारतें आज़मा लेता था। पर घर पर हिम्मत नहीं होती थी क्योंकि पिताजी, जो अपने गुस्से के लिए कुख्यात थे, मुझे ही सीधा कर देते।

स्कूल के टीचर मेरी नज़र में, बच्चों के कान खींचने के लिए लम्बे-लम्बे नाखून रखते थे और बेंत घुमाते घूमते रहते थे। मेरे स्वभाव ने मुझे एक दुर्लभ खिताब दिलवाया था – 'क्लास का सबसे बड़ा भगोड़ा।' कक्षा की जगह मैं वाचनालय में या चर्च के नारियल के बाग में रहना पसन्द करता था। मेरा पसंदीदा शौक था शिक्षकों के नित नए नाम रखकर बपतिस्मा करना और उन नामों को फैलाना। कई नाम खूब चल जाते थे। इन सब कारणों से मेरे शिक्षक

मुझसे काफी घबराते थे और उन लोगों ने मेरा भी एक नाम रखा था जिसका अर्थ है – 'गोरा शैतान'। बाद के स्कूली दिनों में मैं इसी नाम से जाना जाता था, अपने असली नाम से नहीं।

जब मैं अपने स्कूली दिनों को याद करता हूँ तो जो घटना एकदम याद आती है वह दसवीं कक्षा की है। स्कूल के वार्षिक खेलकूद दिवस के पहले हमारे शारीरिक शिक्षा के टीचर, छह फुट लम्बे एक विशालकाय व्यक्तित्व, को एक नया तरीका सूझा। उन्होंने बच्चों से कहा कि क्या-क्या खेलकूद की गतिविधियाँ की जाएँ इस पर वे अपने सुझाव दें। मेरे लिए यह कुछ मस्ती करने का अच्छा मौका था। छात्रों से कहा गया कि वे अपने सुझाव कागज़ पर लिखकर, अपना नाम और क्लास भी लिखकर सुझाव पेटी में डाल दें। मेरे अधिकतर दोस्तों ने ऐसा ही किया। मैंने भी एक कागज़ उठाया और अपनी ईजाद की हुई सारी गतिविधियाँ जैसे – 1000 किलोमीटर का मैराथन, 100 मीटर की लम्बी-कूद, मुक्केबाज़ी, हवा में तैराकी, और भी बहुत-बहुत कुछ लिख दिया। फिर वह कागज़ मैंने अपने दोस्तों के बीच घुमाया। हरेक ने उसे ठहाकों के साथ पढ़ा। पर मेरे एक दोस्त ने चालाकी से वह कागज़ सुझाव पेटी में डाल दिया। मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था।

अगले दिन मैं इस घटना (पर्ची सुझाव पेटी में डाले जाने की) से बेखबर स्कूल आया। शारीरिक शिक्षा (पी.टी.) टीचर ने मुझे आधी छुट्टी के वक्त स्टाफ रूम में बुलाया। अन्दर जाकर मैंने उन्हें कई सारी महिला टीचरों के बीच शान से बैठा हुआ पाया। उन्होंने वही कागज़ निकाला (जिसमें मैंने अपने सुझाव लिखे थे) और मुझसे पूछा कि वो किसने लिखे थे। मैं मना नहीं कर पाया क्योंकि उस पर्ची पर मेरा नाम और क्लास भी लिखा था। उन्होंने मुझे कमरे के बीच रखी मेज़ पर चढ़ने को



कहा। फिर एक लम्बी मोटी बेंत लेकर वे मेरी ओर बढ़े। मैं अपनी सफाई पेश करना चाहता था पर उन्होंने मुझे कुछ बोलने ही नहीं दिया। वे चीख-चीखकर कहते सुने गए थे कि वे मुझसे 1000 कि.मी. की दौड़ लगवाएँगे और फिर वे मुझे पीटने लगे। मैंने चारों ओर देखा। सभी चेहरों पर व्यंग्य भरी मुस्कानें थीं। मुझसे सहा नहीं गया। एक झटके में मैं मेज़ से नीचे कूदा, मैंने पी.टी. टीचर के हाथ से बेंत छुड़ा ली और उन्हें पीटने लगा। मालूम नहीं कितनी बार। फिर मैंने बेंत उनके चेहरे के आगे घुमाया और बाहर भाग गया। पी.टी. टीचर क्षण भर के लिए सचमुच स्तब्ध और हक्के-बक्के रह गए। उन्हें सूझा ही नहीं कि क्या करें।



वह दिन मेरे लिए बहुत ही बुरा दिन था। मेरी पिटाई हरेक शिक्षक, यहाँ तक कि प्रधान अध्यापक ने भी की। पर मैं रोया नहीं। यह देखकर शिक्षकों को और गुस्सा आया। आखिरकार प्रधान अध्यापक ने मुझे बताया कि जब तक मैं अपने पालकों को न लेकर आऊँ, तब तक के लिए मुझे स्कूल से निलम्बित किया गया था।

फिर भी, इस घटना से मुझे जो शोहरत मिली, उससे मैं खुश था। लेकिन इसके बारे में घर पर बताने की मेरी हिम्मत नहीं हुई क्योंकि मुझे पता था कि यह सुनकर मेरे पिताजी मेरे हाथ काट डालने से कम में नहीं मानते। मैं स्कूल तो जाता रहा लेकिन सारा दिन गिरजाघर के वाचनालय में अख़बार और किताबें पढ़कर बिता देता था। तीन दिन गुज़र गए। मैंने तय कर लिया था कि अपने माँ-बाप को तो नहीं लाऊँगा – चाहे कुछ भी हो जाए। अचानक, वाचनालय में अपनी कक्षा शिक्षिका को, जो हमें हिन्दी पढ़ाती थीं, देखकर मैं हैरान हो गया। मुझे लगा कि वह मेरी पिटाई करेंगी और मैंने मन ही मन अपने पालकों को स्कूल नहीं लाने के लिए कई झूठे बहाने गढ़ लिए। मैंने सोचा कि अगर वह पिटाई करती हैं तो मैं कोई बहाना कर लूँगा।

उन्होंने ही मेरा नाम 'गोरा शैतान' रखा था। पर तब उन्होंने मुझे प्यार से मेरे सही नाम से पुकारा। थोड़ा हिचककर वह मेरे पास आईं और मेरे सिर को अपने हाथों से सहलाने लगीं। उन्होंने मुझे बहुत-सी सलाहें दीं पर आज मुझे कुछ भी याद नहीं। यह याद है कि वे बार-बार कह रही थीं – "मैं समझ सकती हूँ।" शायद इसलिए कि जिस दिन यह घटना हुई थी, वह भी स्टाफ रूम में मौजूद थीं। फिर उन्होंने अगले दिन से ही कक्षा में आने को कहा। अकेले उन्हीं की कोशिशों के कारण मेरा निलम्बन रद्द हो पाया। मुझसे यह भी कहा गया कि मैं कक्षा में (सिर्फ हिन्दी के पीरियड में) सबसे आगे बैठूँ।

मुझे लगता है कि उनकी तरकीब काम कर

गई। छमाही परीक्षाओं में मुझे हिन्दी में सब छात्रों से ज़्यादा नम्बर मिले। मेरी कक्षा शिक्षिका ज़रूर बहुत खुश हुई होंगी। फिर दसवीं के बोर्ड की परीक्षा में मैंने अपने पूरे स्कूली जीवन का सबसे अच्छा रिज़ल्ट पाया। मुझे काफी अच्छे फर्स्ट डिविज़न के नम्बर मिले। यह सब मैंने सिर्फ उस टीचर के लिए ही हासिल किया था।

अभी भी, मैं जब भी घर लौटता हूँ, उनसे ज़रूर मिलता हूँ। उन्हें मेरा नाम तो याद नहीं रहता पर उनका दिया नाम (गोरा शैतान) याद रहता है और हम दोनों उस पर खूब हँसते हैं। कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि काश, सभी शिक्षक मेरी हिन्दी टीचर की तरह होते। जो अपने छात्रों से कहते "मैं तुम्हें समझ सकती हूँ" और इस बात को महसूस भी करते!!

● साजू एम.के.

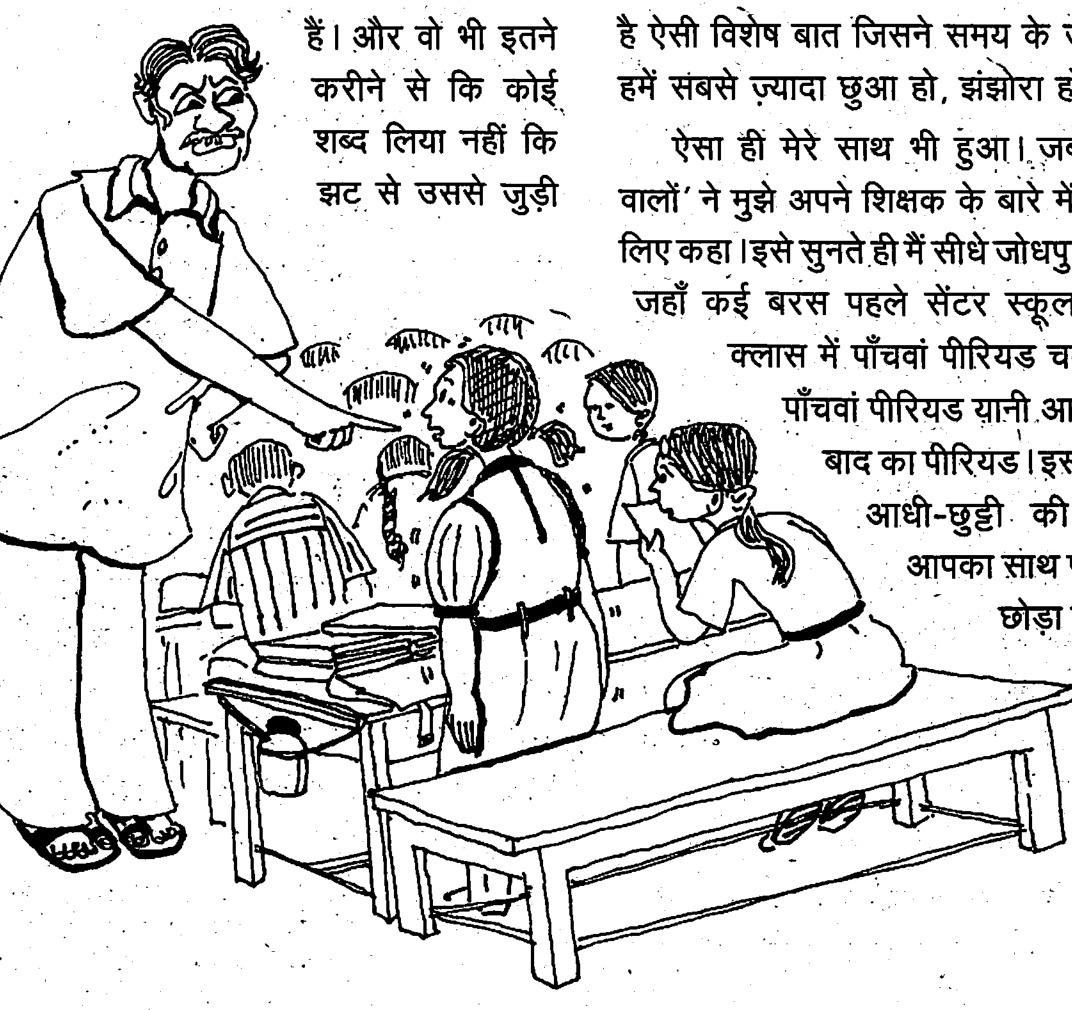
(साजू एकलव्य के भोपाल केन्द्र में काम करते हैं।)

सभी चित्र : आशुतोष भारद्वाज

---

6 सत्ते 46

न जाने इतनी सारी स्मृतियाँ हमारे दिमाग के तहखाने में कैसे रह पाती हैं। और वो भी इतने करीने से कि कोई शब्द लिया नहीं कि झट से उससे जुड़ी एक घटना सामने आ खड़ी होती है। परन्तु यह 'एक घटना', कोई भी घटना नहीं होती। इसमें होती है ऐसी विशेष बात जिसने समय के उस चक्र में हमें सबसे ज़्यादा छुआ हो, झंझोरा हो......।



ऐसा ही मेरे साथ भी हुआ। जब 'चकमक वालों' ने मुझे अपने शिक्षक के बारे में लिखने के लिए कहा। इसे सुनते ही मैं सीधे जोधपुर पहुँच गई, जहाँ कई बरस पहले सेंटर स्कूल की चौथी क्लास में पाँचवां पीरियड चल रहा था। पाँचवां पीरियड यानी आधी-छुट्टी के बाद का पीरियड। इस समय तक आधी-छुट्टी की मस्ती ने आपका साथ पूरी तरह से छोड़ा नहीं होता है

और न ही विषय को पढ़ने की तैयारी आप में प्रवेश कर चुकी होती है। मैं भी कुछ ऐसे ही मूड में मुँह में खाने का स्वाद सँज़ोए अपनी सहेली से बातें करते-करते गणित की किताब, कापी निकाल रही थी। इतने में मोहन सर आ गए। हमने खड़े होकर उनका अभिवादन किया। चूँकि बातें कुछ रह गईं थीं इसलिए सर के पढ़ाना शुरू करने के बाद भी हम धीरे-धीरे मौका देखकर बातें कर रहे थे। पर मोहन सर, जो अपनी क्लास में एकदम शान्ति पसंद करते थे, की नज़र में यह ज़बरदस्त हिमाकत थी। वे कमरे में फैली हल्की-हल्की सी भिनभिनाहट के ज़रिए मुझ तक पहुँचे, और गुस्से से बोले। तुम.....हाँ, तुम खड़ी हो और 6 का पहाड़ा सुनाओ।

मोहन सर जो एक तो वैसे ही कड़क मिज़ाज थे, और ऊपर से गुस्से में बोले तो मैं डरकर एकदम खड़ी हो गई। मैंने घबराहट में पहाड़ा सुनाना शुरू किया – छह एकम छह, छह दूनी बारह, छह तिया अठारह,..... छह सत्ते छियालिस। पर धीरे-धीरे अंक, शब्द मेरा साथ छोड़ते प्रतीत हुए। मेरा दिमाग़ अंकों, तर्क के पीछे दौड़ा। पर सब व्यर्थ। मेरा बायाँ गाल एक ज़ोरदार तमाचे के इंतज़ार में चिरमिराने लगा, कान मरोड़े जाने के इंतज़ार में लाल हो गया। जिस्म का जैसे सारा खून इन्हीं दो जगहों पर इकट्ठा हो गया। आगे बोलो......ज़ोरदार आवाज़ आई। जल्दी बोलो..... आवाज़ की तल्खी, तेज़ी बढ़ती जा रही थी। मुझे लगने लगा कि 40 जोड़ी आँखें मुझ पर टिकी हैं और इन आँखों के पीछे के दिमाग में मेरी अज्ञानता कहकहे लगा रही है।

और फिर डर, शर्म... घबराहट... सभी ने मुझसे मनवा लिया था कि मुझे छह का पहाड़ा नहीं आता। सटाक की आवाज़ के साथ मेरे बाएँ गाल और पूरे जिस्म में चीटियाँ-सी चलने लगीं। और मेरा पेशाब निकल गया।

कहीं कुछ नहीं बदला। सर पहले की तरह फिर से ब्लैकबोर्ड के पास पहुँचकर पढ़ाने लगे। परन्तु मेरी समझ और कान के दरवाज़े बन्द हो गए। उस दिन बाकी का पढ़ाया कुछ भी पल्ले नहीं पड़ा। शर्म, डर, पीड़ा अनबहे आँसुओं में तब्दील होती गई। जिसे किसी ने नहीं जाना। पीरियड खत्म होने के बाद जब सर क्लास से चले गए तो मेरी दोस्त ने कहा यह पानी कैसा.....। मैंने कहा मेरी पानी की बोतल गिर गई थी। पर मुझे लगा कि वह सब जान गई थी।

बेसब्री से मैं छुट्टी का इंतज़ार करने लगी। छुट्टी होने पर अकेले ही घर की तरफ बढ़ गई। रास्ता बहुत अकेला और शान्त था। कुछ सोचते-सोचते अचानक मैंने पाया कि मैं 6 का पहाड़ा बोल रही हूँ। पूरा का पूरा छह एकम छह से छह दशम साठ तक। तो मैं क्लास में क्यों नहीं बोल पाई? मुझे लगा कि मैं दौड़कर वापस क्लास में पहुँचकर ज़ोर-ज़ोर से छह का पहाड़ा बोलूँ।

आज इतने साल बीत जाने के बाद भी यह घटना नहीं भूलती। क्या मोहन सर को कभी यह अहसास होगा कि उनकी दहशत ने मुझे कितना परेशान किया था। इस विषय (गणित) से मेरी रुचि खत्म हो चली थी। और इस पर जले में नमक का काम किया था, छठवीं की जैन मैडम ने। जो काम में रत्ती भर का भी फ़र्क आने पर मुट्ठी बन्द करवाकर उसकी उभरी हड्डियों पर स्केल से मारतीं। वो तो आठवीं के माथुर सर और मेरे पिताजी थे जिन्होंने गणित की सुन्दरता से मेरा परिचय करवाया। नहीं तो......।

● शशि सबलोक

(शशि एकलव्य की स्रोत फीचर सेवा में काम करती हैं)

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

महसूस करना

हम सुनते हैं, बोलते हैं, सूंघते हैं, चखते हैं। सभी प्राणी, मनुष्य और जानवरों को भी ये सब अहसास होते हैं। इनके लिए हमारे शरीर में कई अंग हैं। तुम जानते ही हो कि सम्वेदी अंग यानी इंद्रियाँ इन कामों में मदद करती हैं। हमारी ये इंद्रियाँ तंत्रिकाओं के ज़रिए दिमाग और रीढ़ की हड्डी से जुड़ी होती हैं।

आवाज़ की दिशा को पहचानना



अच्छा एक बात बताओ। तुम्हारी माँ तुम्हें आवाज़ देकर बुलाती है तो तुम समझ लेते हो कि आवाज़ कहाँ से, कौन-से कमरे से दी गई। घर के अन्दर से आवाज़ दी गई या घर के बाहर से। आवाज़ की दिशा को पहचानना हमारे सम्वेदी अंगों की बदौलत ही होता है। चलो अब एक खेल खेलकर देखो कि **तुम आवाज़ की दिशा कैसे पहचानते हो।**

चार या पाँच दोस्त मिलकर ये खेल खेल सकते हैं। किसी एक की आँख पर पट्टी बाँधकर उसे बीच में खड़ा कर दो। और चार लोग चार कोनों पर खड़े हो जाओ।

कोनों पर खड़े हुए खिलाड़ियों में से कोई एक ताली बजाएगा। बीच में खड़े हुए खिलाड़ी को बताना होगा कि आवाज़ किस तरफ से आई। इसी तरह हर बार किसी अलग दिशा से कोई खिलाड़ी ताली बजाएगा और बीच वाले को पहचानना है। फिर गोले को थोड़ा बड़ा करके या आँख पर पट्टी वाले के एकदम पीछे जाकर ताली बजाकर देख सकते हो।

सभी खिलाड़ी एक के बाद एक, बारी बारी से पट्टी बाँधकर बीच में खड़े होंगे। फिर बाद में तय करेंगे कि किसने कितनी बार सही पहचाना। और यह भी कि कितनी दूर होने पर पहचानना आसान था या पास होने पर गड़बड़ा जाते हैं आदि।

अब देखने और संतुलन बनाने का अभ्यास भी कर लो।

किसी एक को बीच में खड़ा करो और चार दोस्त चारों तरफ खड़े हो जाओ। चारों दोस्त थोड़ी दूरी रखकर खड़े रहेंगे। बीच वाले को एक पैर पर खड़े रहकर संतुलन बनाना है।

देखो तुम्हारा यह दोस्त कितनी देर तक अपना संतुलन बनाए रख पाता है। देखना भई, गिरने लगे तो पकड़ लेना। इसके बाद उसे अपनी आँखें बंद करके, एक पैर पर खड़े होकर अपना संतुलन बनाने की कोशिश करनी है।



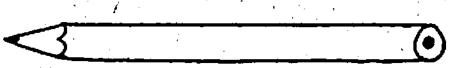
जब सभी दोस्त यह अभ्यास करके देख लें फिर सोचो कि किस स्थिति में ज़्यादा अच्छे से खड़े रह सके – आँख बंद करके या आँख खुली रखकर।

इसी तरह के और भी प्रयोग हो सकते हैं। तुम भी खोज करो और जाँचो परखो कि कैसे हमारे सम्वेदी अंग काम करते हैं। और, कैसे हम महसूस करते हैं। पर एक बात तय है कि यह सब हम इन तंत्रिकाओं से आने जाने वाले संदेशों की वजह से ही कर पाते हैं।

चलो इन तंत्रिकाओं की रचना समझें।

इसके लिए बहुत सारी पेंसिलों की ज़रूरत होगी। वैसे पेंसिलों की जगह तुम शरबत पीने वाला पाइप (स्ट्रॉ), सरकण्डे या काँस की गोल डण्डी या छोटी-छोटी लकड़ियों का इस्तेमाल भी कर सकते हो।

एक पेंसिल को एक तंत्रिका सूत्र (नर्व फाइबर) की तरह समझो। पेंसिल (**चित्र 1**) के पिछले हिस्से को देखो, आसपास लकड़ी और बीच में पेंसिल – इसी तरह की होती है एक तंत्रिका सूत्र की रचना।



(चित्र–1)



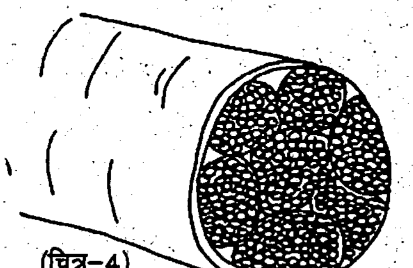
(चित्र–2)

अब कई पेंसिलों को मिलाकर एक गोल गट्ठा-सा बनाओ (**चित्र–2**)। इस गट्ठे के ऊपर काग़ज़ की एक परत चढ़ा लो। यानी काग़ज़ लपेटकर चिपका लो (**चित्र–3**)। यह हुआ तंत्रिका सूत्रों का एक गट्ठा (बंडल)।



(चित्र–3)

इस तरह के सात-आठ गट्ठे और बनाओ। फिर इन गट्ठों को मिलाकर एक बड़ा गट्ठा बनाओ। इस बड़े गट्ठे पर एक काग़ज़ की परत लपेटकर चिपका दो। (**चित्र–4**)

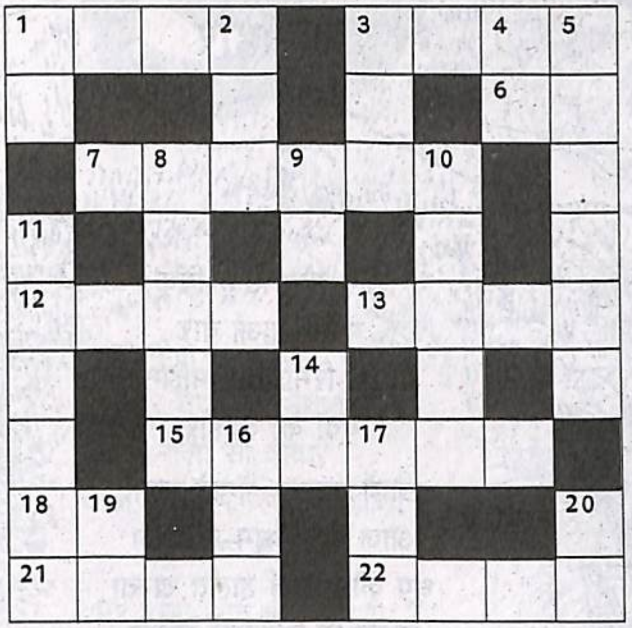


(चित्र–4)

इस बड़े गट्ठे को एक सिरे से (**चित्र–4**) देखने पर वो जैसा दिखाई दे रहा है, अगर किसी तंत्रिका को आड़े में काटकर देखा जाए तो उसकी रचना ऐसी ही दिखाई देगी।

'वी. एस. ओ. हैंड बुक फॉर साइंस टीचर्स' से साभार

वर्ग पहेली - 97



संकेत : दाएँ से बाएँ

1. पैदल चलने का रास्ता (4)
3. जिससे गलती हुई हो, दोषी (4)
6. दारा और हरीश के शरीर में हो रही जलन (2)
7. आकर सूद चलाने में सम्मान जताने वाला (6)
12. दरिया फतह करने में प्रार्थना (4)
13. फौजदारी मामलों में जज को सलाह देने के लिए चुना गया व्यक्ति (4)
15. सहरदों को तोड़ना, जबरन घुसना (6)
18. चेहरे का रंग उड़ जाना (2)
21. नाटक की तैयारी में बार-बार अभ्यास करना (4)
22. वह पक्षी जो शांति का प्रतीक है (4)

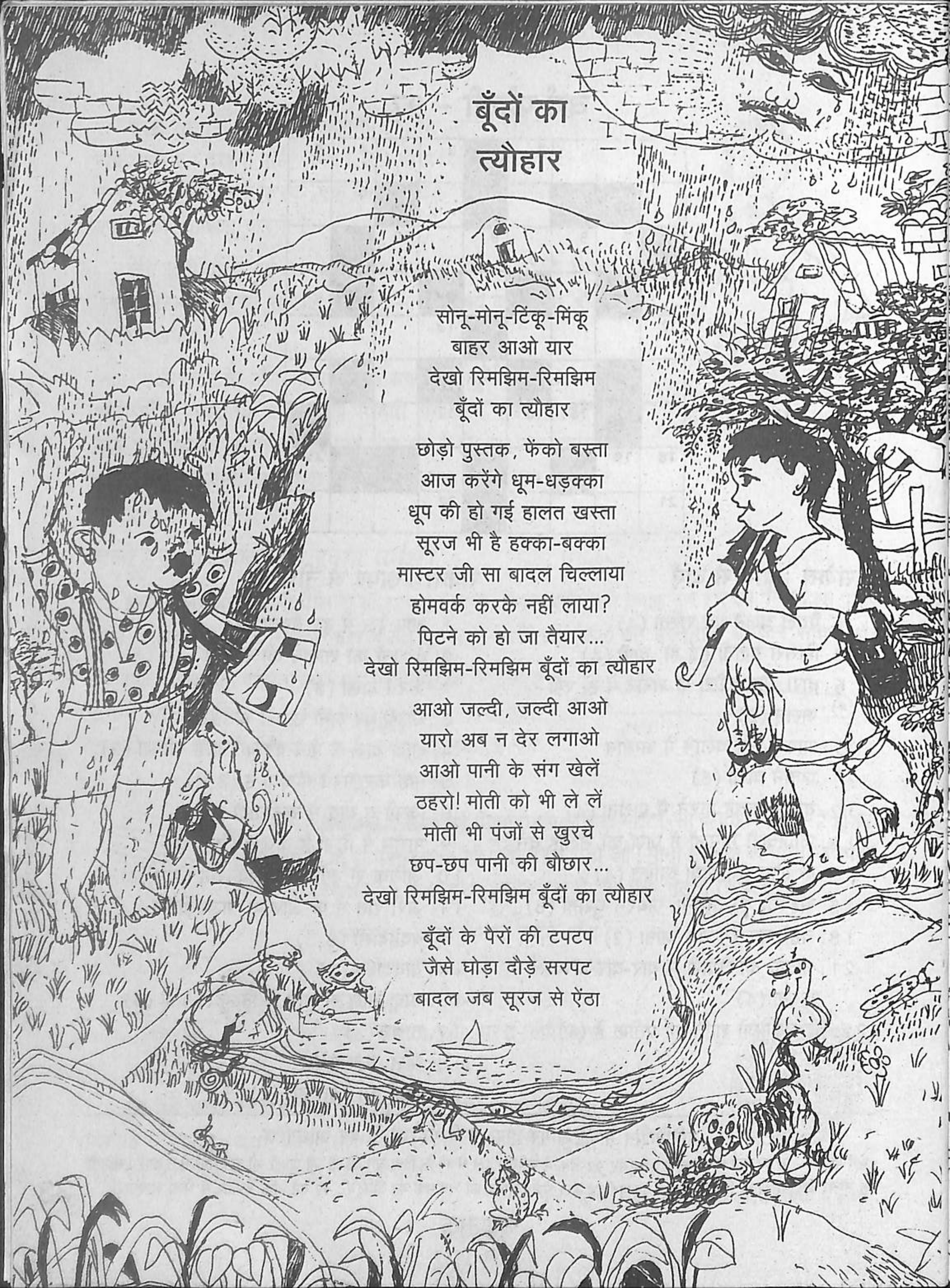
संकेत : ऊपर से नीचे

1. आप रेल में दूर बैठना (2)
2. दुकानों को सामान की सप्लाई करने वाला (3)
3. चमड़ी पर लगी ऊपरी चोट (3)
4. शीवा दारू न पीने की करता है प्रतिज्ञा (2)
5. मोह कर मरने में दया है (3,3)
8. किसी नू याद में रूढ़ीवादी (5)
9. मासूम में छिपा है कंजूस (2)
10. अधिक से अधिक का विपरीत (2,1,2)
11. अरी रात में फ और फ, गड़बड़ी या बदहवासी (3,3)
14. याददाश्त (2)
16. डाकू माल ले भागे में बिल्कुल सही (3)
17. नम्बर (3)
19. बोल, बता दे (2)
20. जहाँ तुम रहते हो, (2)

हरिकिशन माली आगर द्वारा भेजी गई पहेली पर आधारित

वर्ग पहेली - 97का हल चकमक के अक्टूबर, 99 अंक में छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें। सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का अक्टूबर, 99 का अंक उपहार में भेजा जाएगा।

बूँदों का त्यौहार

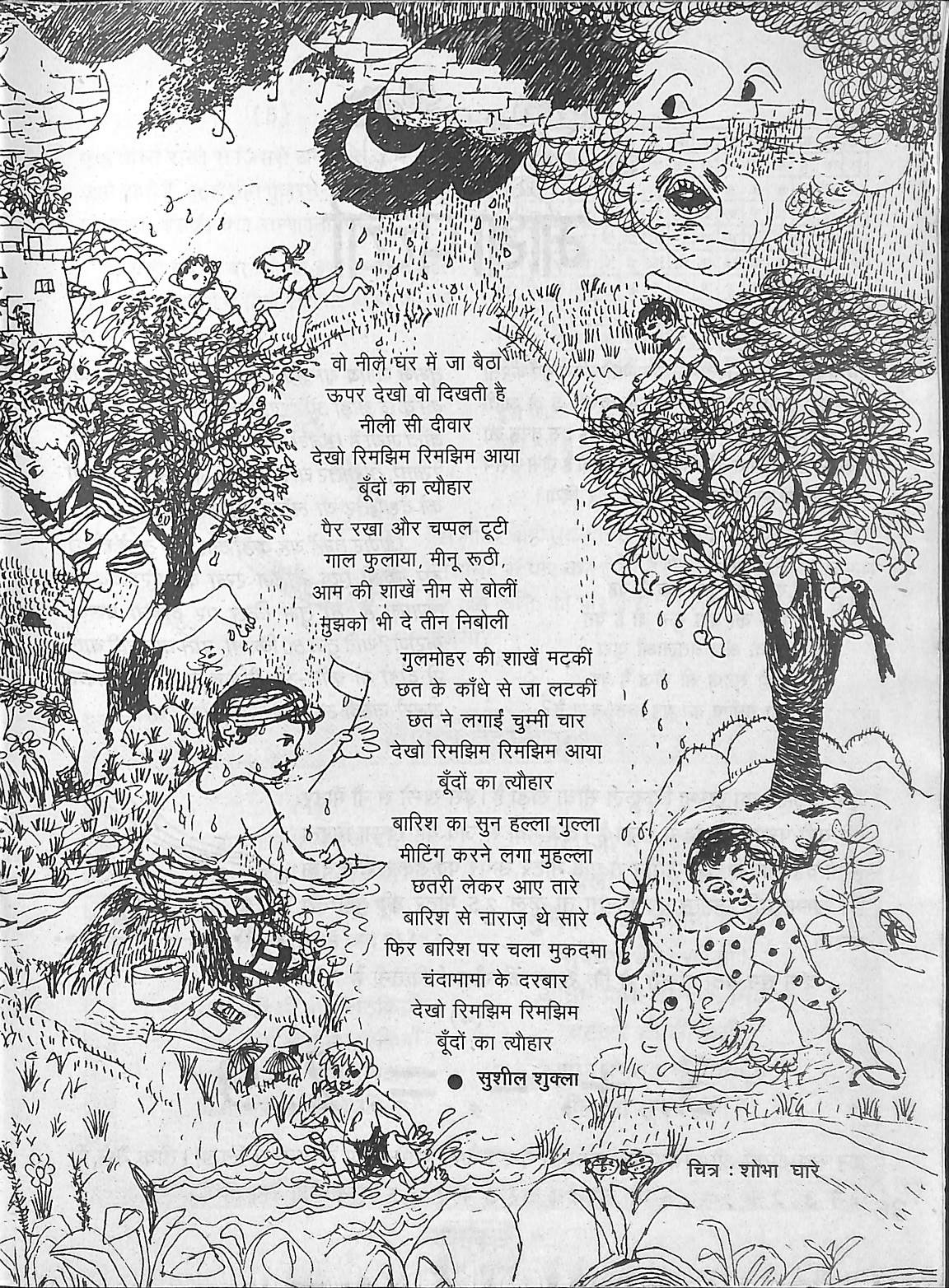


सोनू-मोनू-टिंकू-मिंकू
बाहर आओ यार
देखो रिमझिम-रिमझिम
बूँदों का त्यौहार

छोड़ो पुस्तक, फेंको बस्ता
आज करेंगे धूम-धड़क्का
धूप की हो गई हालत खस्ता
सूरज भी है हक्का-बक्का
मास्टर जी सा बादल चिल्लाया
होमवर्क करके नहीं लाया?
पिटने को हो जा तैयार...
देखो रिमझिम-रिमझिम बूँदों का त्यौहार

आओ जल्दी, जल्दी आओ
यारो अब न देर लगाओ
आओ पानी के संग खेलें
ठहरो! मोती को भी ले लें
मोती भी पंजों से खुरचे
छप-छप पानी की बौछार...
देखो रिमझिम-रिमझिम बूँदों का त्यौहार

बूँदों के पैरों की टपटप
जैसे घोड़ा दौड़े सरपट
बादल जब सूरज से ऐंठा



वो नीले घर में जा बैठा
ऊपर देखो वो दिखती है
नीली सी दीवार
देखो रिमझिम रिमझिम आया
बूँदों का त्यौहार

पैर रखा और चप्पल टूटी
गाल फुलाया, मीनू रूठी,
आम की शाखें नीम से बोलीं
मुझको भी दे तीन निबोली

गुलमोहर की शाखें मटकीं
छत के काँधे से जा लटकीं
छत ने लगाई चुम्मी चार
देखो रिमझिम रिमझिम आया
बूँदों का त्यौहार

बारिश का सुन हल्ला गुल्ला
मीटिंग करने लगा मुहल्ला
छतरी लेकर आए तारे
बारिश से नाराज़ थे सारे
फिर बारिश पर चला मुकदमा
चंदामामा के दरबार
देखो रिमझिम रिमझिम
बूँदों का त्यौहार

● **सुशील शुक्ला**

चित्र : शोभा घारे



माथापच्ची

(1)

मनीषा हमेशा से उल्टी-सीधी गणितीय गणनाएँ करती रही है। कभी दो को दो से गुणा करके 5 ले आती है, कभी कुछ तो कभी कुछ। लेकिन वह इस तरह की किसी अजूबी बात को सिद्ध भी कर देती है जैसे उसने नीचे लिखी इस पहेली को सिद्ध कर दिया।

दस का दुगुना दो है वह
दो देखो तो एक है वह
एक का दूना एक है वह
एक का दस गुना दो है वह
सोचो और बतलाओ ज़रा
बड़ी सहज सी चीज़ है वह

बताओ मनीषा का यह 'वह' क्या है?

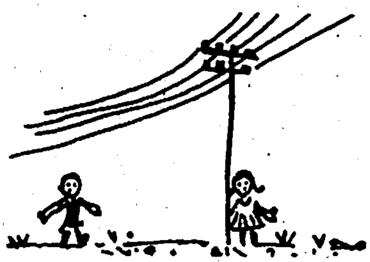
(2)

तुमने ग्लोब या नक्शे में देखा होगा कि पृथ्वी को कुछ आड़ी और खड़ी काल्पनिक रेखाओं में बाँटा गया है। इनमें से आड़ी रेखाओं को क्षैतिज रेखाएँ, अक्षांतर या लैटीट्यूड और खड़ी रेखाओं को देशान्तर या लॉन्जीट्यूड कहते हैं।

अगर तुम्हें यह कहा जाए कि तुम्हें दौड़ते हुए किसी एक क्षैतिज रेखा का पूरा चक्कर लगाना है, तो तुम किस पर दौड़ना पसन्द करोगे? यदि तुम 50 कि.मी. प्रति घण्टे की चाल से दौड़ो तो कौन-सी क्षैतिज रेखा का चक्कर सबसे जल्दी लग पाएगा? और क्यों?

(3)

एक बिजली का खम्भा बिल्कुल सीधा खड़ा है। इस खम्भे से नौ मीटर की दूरी पर एक आदमी खड़ा है। तेज हवा से जब यह खम्भा गिरता है तो वह आदमी उसे ज़मीन से एक मीटर ऊपर पकड़कर रोक देता है। खम्भा यदि ज़मीन पर गिरता तो कुल 25 मीटर की दूरी तय करता।



क्या तुम बता सकते हो कि खम्भे की ऊँचाई कितनी है

(4)

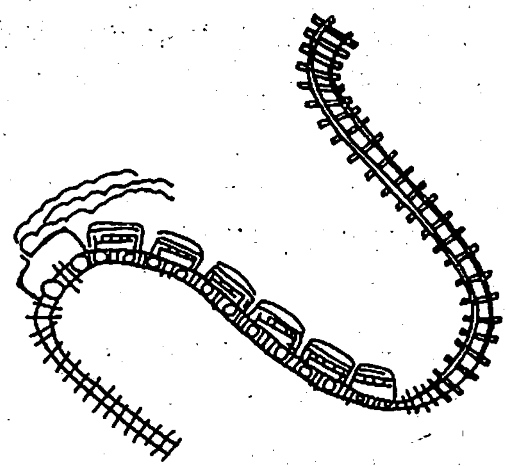
3, +, –, =, 2, 9

इन सब अंकों और चिह्नों का उपयोग करके एक समीकरण के रूप में लिखो। ठीक वैसे ही जैसे 3, 2 + , = , 5 का उपयोग कर 3 + 2 = 5 लिखा जा सकता है।

(5)

एक व्यस्त रास्ते से जिससे अनगिनत लोग आते-जाते रहते हैं, पहले तीन गुज़रने वाले लोगों में तीनों पुरुष हों, इसकी क्या सम्भावना होगी?

साथ ही यह भी बताओ कि इसी रास्ते से पहले तीन गुज़रने वालों में तीनों महिलाएँ हों इसकी क्या सम्भावना होगी?



(6)

कि	ट	प	रा	छि	प	क	ली	गा	य	पा	ल	क	गू	भा
बा	घ	आ	ग	ब	बू	चा	वी	च	क	वा	अ	द	पा	लू
य	ड़ि	पी	ल	न्द	र	लू	श	इ	न	न	ज	र	कि	मा
सि	या	र	भे	र	म	छ	ली	ब	ख	र	ग	जूँ	ल	शा
लो	ल	क	ड़	ब	ग्घा	घों	प	छ	जू	ता	र	ख	कि	ब
म	ण	बू	तां	शि	पू	घा	घो	ड़ा	रा	क	ब	गु	ला	त्त
ड़ी	ति	त	ली	ए	ख	र	गो	श	ह	तु	क	ला	ल	ख
बा	शे	र	गा	ज	र	स	पा	टि	ट	ह	री	ब	गा	टो
त	य	बि	ल्ली	च	हा	थी	ल	कु	क	नि	छ	खे	य	ला
कौ	आ	फ	त	नू	य	भा	र	त्ता	ला	ज	अ	ड़ा	ति	ल

इस जाली में बहुत सारे जानवर, पक्षी, कीड़े आदि छिपे हुए हैं। तुम कम से कम पन्द्रह नाम ढूँढो।

(7)

दस मीटर चौड़ी एक दीवार को एक 190 मीटर लम्बी ट्रेन 5 मिनिट में पार कर लेती है। इसी ट्रेन को एक स्टेशन पर खड़े व्यक्ति को पार करने में लगभग कितना समय लगेगा?

गणित पहेलियाँ

(1)

रामलाल के लड़के दो,
इन लड़कों की बहनें दो।
इन लड़कों की मामी पूछे,
तुम घर में कितने जन हो?

(2)

खेल रहीं थीं बीस लड़कियाँ
टीम- टीम में पाँच लड़कियाँ
बतलाओ कुछ सोच-समझकर
कितनी टीमें थीं ढोलकिया?

(3)

दादी जी ने छुपाकर रखीं
थैली में दस गोली
मुनिया ने आ श्यामा के संग
गुपचुप थैली खोली।
आधी-आधी दोनों ने मिल
चटकर दी थी थैली
श्यामा से तब मुनिया पूछे
कितनी तूने ले लीं?

गोपीचन्द श्रीनागर, झाँसी

आओ खेलें खेल- गाएँ गीत : 5

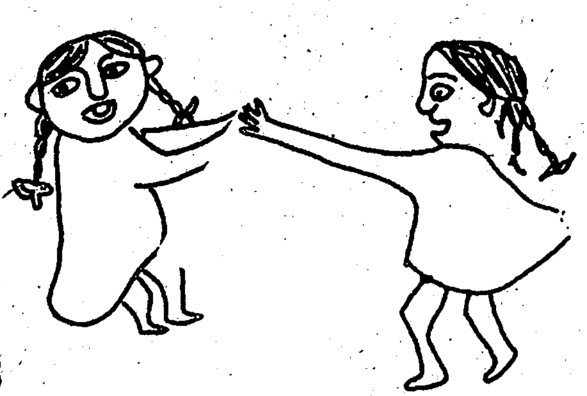
इस बार भी फैज़ाबाद से दीपा, सबल और पूजा सिंह ने अपने आसपास के खेल और उनके साथ गाए जाने वाले गीत हमें लिखकर भेजे हैं। तुम भी ये खेल खेलते होगे। तुम इनके साथ कौन-से गीत गाते हो, हमें लिखना।

इसके अलावा तुम अपने आसपास के खेल, जो तुम खेलते हो और उनके साथ जो गीत गाते हो, हमें लिखना। अगर तुम इस तरह के खेलों के बारे में नहीं जानते तो अपने घर के बड़ी उम्र के लोगों से पूछो। उन्हें अपने ज़माने के कुछ खेल तो याद होंगे ही। उनसे सीखो, खेलो और हमें भी लिखकर भेजो। हम चकमक में छापेंगे तो और बच्चे भी वो खेल खेल पाएँगे।

पोशम पा

इस खेल को खेलने के लिए सबसे पहले दो व्यक्ति जेल बनाते हैं। मतलब दोनों हाथ ऊपर करके एक-दूसरे का हाथ पकड़कर खड़े हो जातो हैं। और बाकी सब जेल के अन्दर-बाहर घुमते हैं। तब जेल बनाने वाले ये दोनों लोग साथ में नीचे दिया गाना गाते जाते हैं। आखिर में जब ऐन मैन चैन वाली लाइनें आती हैं तो जेल बनाने वाले अपना हाथ नीचे कर लेते हैं और जो खिलाड़ी जेल में फँस जाए वह आऊट हो जाता है।

पोशम पा भई पोशम पा,
डाकियों ने क्या किया
सौ रुपए की घड़ी चुराई
अब तो जेल में जाना पड़ेगा
जेल की रोटी खाना पड़ेगा
जेल का पानी पीना पड़ेगा।
ऐन मैन चैन।



कहीं–कहीं पर इस खेल को खेलते हुए यह गीत भी गाते हैं –

खड़त खड़त गुड़ पकत है
भाऊ जी भीतखा नाचत है
बाबा दिया दिखावत है
भाई तान लगावत है।

हमने बचपन में जब यह खेल खेला था तो शुरू में ही जेल बनाने वाले दोनों खिलाड़ी आपस में यह तय कर लेते थे कि उनकी टीम का नाम या निशान क्या होगा। जैसे एक का लड्डू तो दूसरे का पेड़ा, एक का खट्टा तो दूसरे का मीठा, एक इमली तो एक जामुन आदि। खेल गीत के बोलों में भी 'डाकियों' शब्द की जगह 'डाकुओं' का उपयोग किया जाता था। कई इलाकों में इसी गीत में एक और भी बदलाव होता है। यह गीत ऐसा होता था

पोशम पा भई पोशम पा,
चाय की पत्ती पोशम पा
डाकुओं ने क्या किया
सौ रुपए की घड़ी चुराई

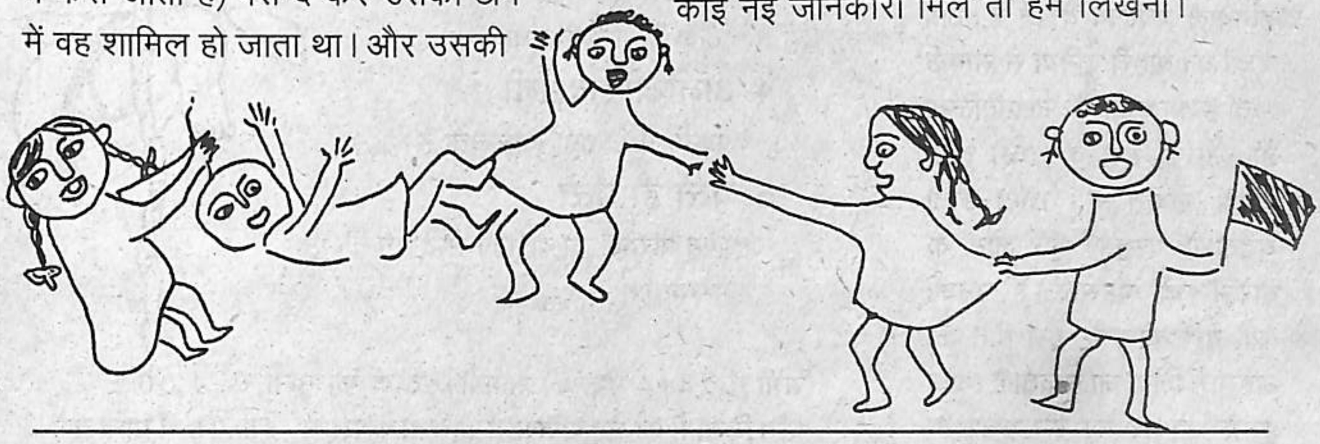
अब तो जेल में जाना पड़ेगा
जेल की रोटी खाना पड़ेगा
जेल का पानी पीना पड़ेगा।
डाक डाक डाक

इस तरह जो खिलाड़ी 'डाक डाक डाक' के साथ ही नीचे आने वाले हाथों के बीच फँस जाता था उसे एक कोने में ले जाकर पूछते थे कि उसे क्या चाहिए – 'लड्डू लोगे या पेड़ा?' या जो भी नाम रखें हों उनका पूछते थे।

फिर जो भी नाम वह डाकू (जो हाथों की जेल में फँस जाता है) पसन्द करे उसकी टीम में वह शामिल हो जाता था। और उसकी कमर पकड़कर उसी के पीछे खड़ा हो जाता था।

फिर खेल शुरू से शुरू करके खेलते जाते थे। तब तक जब तक कि सारे लोग जेल में फँसकर अपनी पसन्द से नाम चुनकर दो टीमों में न बँट जाएँ। जब सारे खिलाड़ी दो टीमों में बँट जाएँ तो उनमें खींचातानी का खेल शुरू हो जाता था।

क्या यह खेल तुम किसी और तरह से खेलते हो? अपने आस-पास पता लगाओ कि यह खेल क्या इसी तरह से खेला जाता है? अपने माँ-पिताजी, दीदी-भैया, मौसी-काकी आदि से पूछो। कोई नई जानकारी मिले तो हमें लिखना।



माथापच्ची : हल जुलाई, 99 अंक के

1. सिक्का 300 ईसा पूर्व का नहीं हो सकता क्योंकि जब सिक्का बना था यानी ईसा के पैदा होने से पहले कैसे पता हो सकता है कि 300 साल बाद ईसा जन्म लेंगे।
2. 49.3 प्रतिशत लगभग
3. अधिक से अधिक सात बार
4. 149
5. (1) घड़ी के विज्ञापन में हमेशा एक ही स्थिति दिखाऊ जाती है, दस बजकर दस मिनट। इस स्थिति में घड़ी की कम्पनी का नाम ठीक काँटों के बीच आता है। इसलिए हमारी नजर सीधे उस पर पड़ती है।
   (2) 1 घण्टा 5 मिनट बाद
   (3) ज्वेल घड़ी के पुर्ज़ों को घिसने से बचाने के लिए लगाए गए कुछ छोटे छोटे कण होते हैं। ये कठोर व कीमती धातुओं के टुकड़े होते हैं।
6. दर्पण में वस्तु का पूरा प्रतिबिम्ब देखने के लिए दर्पण की ऊँचाई , वस्तु की ऊँचाई की कम से कम आधी होना चाहिए।
7. शिक्षक तुमसे तुम्हारी आयु पूछ रहे हैं।

वर्ग पहेली - 95 का हल

अं		कु	ख्या	त		स	ह	सा
गि	रो	ह		स	च		ज्जा	
या		रा		ली		च	म	क
	दा		ग	म	क			मा
अ	ना	चा	र		प	रे	शा	न
जा			ल	प	ट		प	
त	बा	ही		छ		झां		ब
	दा		छा	ता		झ	रो	खा
अ	म	ल		वा	न	र		न



एकलव्य के नए प्रकाशन

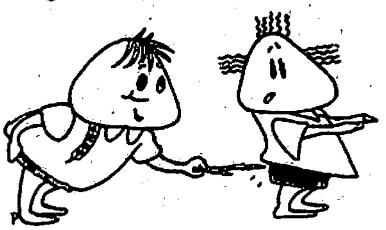
पाँच मराठी पुस्तकें हिन्दी में पहली बार

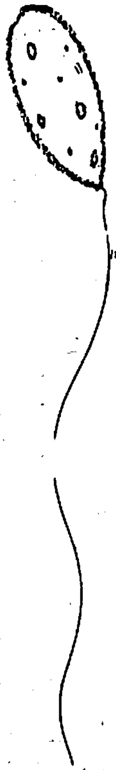
पुणे के एक स्कूल अक्षरनंदन में विकसित इन पुस्तकों में बच्चों के साथ की गई विभिन्न रोचक गतिविधियों का वर्णन सुन्दर चित्रों के साथ किया गया है।

ये किताबें नया-नया पढ़ना सीखने वाले बच्चों, उनके पालकों और शिक्षकों के लिए हैं।

पालकों व शिक्षकों को ऐसे अनेक मौके मिलते हैं जब वे बच्चों को बढ़ते हुए देखते हैं, उनमें होनेवाले बदलाव देखते हैं। जब बच्चों का बाहरी दुनिया से सम्पर्क होता है तब बच्चों में क्या प्रतिक्रिया हो रही है, इसे वे अच्छी तरह समझ सकते हैं। छोटी-छोटी घटनाओं, वस्तुओं और लोगों के बारे में बच्चे क्या सोचते हैं, उनका क्या दृष्टिकोण है, इस बात का अहसास लिया जा सकता है। और इसके आधार पर हम बच्चों के विकास में मदद भी कर सकते हैं।

ऐसी इच्छा रखने वाले लोग भी कई बार कहते हैं कि 'कुछ करने को हम तैयार हैं लेकिन दरअसल क्या करें यह समझ नहीं आता?' इन छोटी पुस्तिकाओं में प्रस्तुत अनुभवों से ऐसे लोगों को निश्चित ही कुछ मदद मिलेगी।





1. टिपिक...पाँ... भर्र... 

कितने शब्द बिखरे हैं हमारे आसपास

2. गुब्बारे

एक गुब्बारा हमें कितनी सारी बातें बता सकता है।

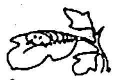
3. पास या नापास

रोजमर्रा की छोटी-छोटी बातों में क्या ठीक है और क्या नहीं?

4. अनोखी प्रदर्शनी

प्रकृति में कितनी विभिन्नता है।

5. पत्ते ही पत्ते

अपने परिवेश को बारीकी से देखने का एक अभ्यास। 



सभी में 24+4 पृष्ठ की सामग्री। प्रत्येक का मूल्य रू. 7.00

पाँच किताबों का सेट रजिस्टर्ड डाक से केवल रू. 45.00 में प्राप्त करें।

रूसी-पूसी और **चूहे को मिली पेंसिल** सीरीज में रोचक चित्रों और मजेदार कहानियों वाली तीन और पुस्तिकाएँ –

मैं भी. . .	पृष्ठ 10+4	रू. 6.00
नाव चली	पृष्ठ 10+4	रू. 6.00
बिल्ली के बच्चे	पृष्ठ 14+4	रू. 7.00

पाँच किताबों का सेट रजिस्टर्ड डाक से केवल रू. 40.00 में प्राप्त करें।



दोनों सेटों की सभी किताबें रू. 75.00 में रजिस्टर्ड डाक से प्राप्त करें। राशि मनीआर्डर से या एकलव्य के नाम में बने ड्राफ्ट से इस पते पर भेजें- एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल





● निमिषा डहरवाल, नौ वर्ष, भिलाई, म. प्र.



चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अन्तर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक MP-2/P-431/99
रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल 462 016 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना